RNI No.10742/1957

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:57, Issue: 05
October - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

अक्तूबर-2026
रु.20/-

13-10-2026
मंगलवार
रात - हंसवाहन

वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर आं.प्र. राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन.चंद्रबाबुनायूडु जी ने राज्य सरकार की ओर से भगवान बालाजी को पवित्र रेशमी वस्त्रों को 15-09-2026 को समर्पित किया। बालाजी का दर्शनानंतर वेदपंडितों ने मुख्यमंत्री जी को वेदाशीर्वचन किया। टी.टी.डी. बोर्ड के चैरमेन, ई.ओ., अतिरिक्त ई.ओ. ने मुख्यमंत्री जी को चित्रपठ व तीर्थप्रसादों को सौंपा दिया। इस संदर्भ में 2027 वर्ष का नूतन डैयरी और कैलंडर को मुख्यमंत्री जी ने विमोचन किया।

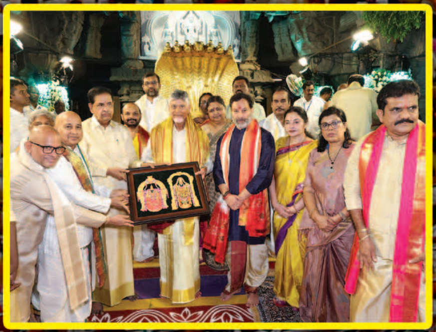

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-४६)

सब ओर से परिपूर्ण जलाशय के प्राप्त हो जाने पर छोटे जलाशय में मनुष्य का जितना प्रयोजन रहता है, ब्रह्म को तत्त्व से जाननेवाले ब्राह्मण का समस्त वेदों में उतना ही प्रयोजन्न रह जाता है। और एक भाव-स्नान पान आदि विषयों को लिए जल से भरे तालाब आदि से मनुज का जो प्रयोजन है, वही प्रयोजन समस्त वेदों से अनुभवी ब्रह्मनिष्ठ को है।

मोदलुंड कोनलकु मोचि नीह्लु वोयनेल
एदलो नीवुंडगा नितरमुलेला ॥मोद॥

निगममार्गमुन ने नडचनंटे
निगमुलेह्लनु नी महिमे
जगमु लोकुल जूचि जरिगेदनंटे
जगमुलु नी मायाजनकमुलु ॥मोद॥

मनसेह्ल नडुपेट्टि मट्टुन नुंडेनंटे
मनसु कोरिकलु नी मतकालु
तनुवु निंद्रियमुलु तग गेलिचेनंटे
तनुवुनिंद्रियमुल दैवमु! नी महिम ॥मोद॥

इंतलोकि परिकिगा इंदुनंदु जोरनेल
चेंतनिंडु चेरुवुंड चेलमलेला
पंतान श्री वेंकटेश! पट्टि नीके शरणंटि
संतकूटाल धर्मपु संगति नाकेला? ॥मोद॥

साक्षात् भगवान जब सामने खडे हैं, तब अन्यों के सहारे के लिए कोई क्यों तरसे? जब वृक्ष का मूल सामने है, तो शाखाओं को पानी देने की मूर्खता क्यों? कुछ लोग कहते हैं - 'हमारा वैदिक मार्ग है।' क्या वे नहीं जानते हैं कि वेदों का अस्तित्व, तुम्हारी करुणा पर ही आधारित है। कुछ तो कहते हैं - 'जगत की रीति ही हमारा मार्ग है,' जब कि त्रिभुवन तुम्हारी माया से ही जन्मे हैं। कुछ लोग तो, सारी वांछाओं को, दबाकर जीने में बडप्पन मानते हैं। लेकिन यह तो खुली हुई बात है कि तुम्हारी इच्छा से ही वे खुद जन्मे हैं। कोई तो चाहता है कि शरीर तथा इन्द्रियों को वश में रखना चाहिए। इस सबों का सृजन तुम्हीं ने किया है न? परमार्थ को पहचानने के लिए इधर-उधर क्यों भटकें? सरोवर जब सामने है, तो कूप को खोदने की आवश्यकता है क्या? जो भी हो, वेंकटेश! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। धर्म-विपणियों से मेरा क्या लेना-देना है कहो?

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

श्रीवारि वैद्य सेवा

टी.टी.डी. ने हाल ही में ‘श्रीवारि वैद्य सेवा’ नामक एक नई योजना शुरू की है। जो प्रमुख चिकित्सा पेशेवरों को तिरुपति यात्रा के दौरान भगवान वेंकटेश्वर की निःशुल्क सेवा करने का अवसर प्रदान करती है।

डॉक्टर इस योजना के तहत अपना नाम पंजीकृत करवातें हैं और अपने तय सूची के अनुसार तिरुमल में स्थित अश्विनी अस्पताल और तिरुपति में स्थित स्विम्स (SVIMS) और बर्ड (BIRRD) अस्पताल, श्री पद्मावती बाल बच्चों का हृदयालया और एस.वी.आयुर्वेदिक अस्पताल एवं एस.वी.गोशाला में इलाज करा रहे बहुत सारे मरीज़ों को परामर्श और (शल्य चिकित्सा) सर्जरी की सुविधाएँ दे सकते हैं।

विशेष चिकित्सा विशेषज्ञों को तीन दिनों के स्वैच्छिक सेवा का अवसर दिया जाएगा, जबकि एम.बी.बी.एस. (MBBS) डॉक्टर सात दिनों तक सेवा कर सकते हैं। तिरुमल और तिरुपति में टी.टी.डी. के द्वारा आवास और भोजन की व्यवस्था की जाएगी।

हिन्दू धर्मावलंबी वैद्यनिपुण ऑनलाइन के द्वारा टी.टी.डी. वेबसाइट https://ttdevasthanams.ap.gov.in/srivari-seve/instructions में अपना स्लाट को बुकिंग करके इस सेवा कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

पूरे भारत और कई दूसरे देशों के विशेषज्ञों भगवान वेंकटेश्वर के प्रति एक विनम्र योगदान के तौर पर इस योजना में हिस्सा लेने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। चिकित्सा विशेषज्ञ ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए क्लास ले सकते हैं और खास लेक्चर दे सकते हैं, जिससे मेडीकल स्टूडेंट्स (वैद्यकीय छात्र) को एक अनोखा मौका मिलता है।

कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि टी.टी.डी. ने गरीबों को सम्मानजनक और बेहतर जीवन जीने में किस तरह चिकित्सा और आर्थिक सहायता प्रदान की है।

टी.टी.डी. ‘मानव सेवा ही माधव सेवा है’ (इंसानों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है) के नारे में दृढ़ विश्वास रखती है।

इसलिए भगवान श्री वेंकटेश्वर के आशीर्वाद के रूप में टी.टी.डी. अस्पतालों में सेवा करने के इस अवसर को ग्रहण करें और आशीर्वाद को प्राप्त करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-57 अक्तूबर-2026 अंक-05

विषयसूची

श्री वैद्यो नारायणो हरिः - टी.टी.डी. स्वास्थ्य और कल्याण के रूप में अपना आशीर्वाद बरसाता है।	श्रीमती निषा सतीश	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	12
तिरुमल भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी का अन्नप्रसाद	श्री डी.राजकुमार	17
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	22
विजयदशमी (दशहरा) पर्व	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	24
श्री स्वामिपुष्करिणी	डॉ.रमेश कृष्णा	31
महिमान्वित महा मंत्र 'ओम नमो वेंकटेशाय'	डॉ.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	37
श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति : वैदिक ज्ञान-परम्परा का आधुनिक विश्वविद्यालय	श्री सत्यम्, श्री अवधेश कुमार शर्मा	42
नीतिकथा - ज्ञान और बल में श्रेष्ठ कौन?	श्री के.रामनाथन	47
चित्रकथा - प्रथम पूजा प्रथम नैवेद्य प्रथम दर्शन	डॉ.एम.रजनी	50
अक्तूबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	52
क्विज - 51		53

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - ब्रह्मोत्सव के संदर्भ में हंसवाहन पर श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।

चौथा कवर पृष्ठ - चक्रस्नान, तिरुमल।

गौरव संपादक
श्री एम.रविचंद्रा, I.A.S.
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

विजयी भव! दिग्विजयी भव!!

"तिरुवीधुल मेरसी देवदेवुडु, गरिमल मिंचिन सिंगारमुल तोडनु!!" (देवदेव, तिरुमल की माड़ावीथियों में श्रृंगारयुक्त गरिमा संपन्न होकर घूम रहा है) - श्री मलयप्पस्वामी नवरात्रि ब्रह्मोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न वाहनों पर आरूढ़ होकर तिरुमाड़ावीथियों में शोभायात्रा के लिए निकलकर, अशेष भक्तगण को दर्शन प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार...

"परमात्मुडैन हरि पट्टपुराणिनि नीवु, धर मम्मु विचारिंचदगु नीकुनम्मा!!" - (हरि की पट्टराणी तुम हो, हम जैसे मर्त्यलोक के भक्तों का योग-क्षेम जानना तेरा दायित्व बनता है)" तिरुचानूर में विराजमान अलमेलुमंगा मैय्या नवरात्रि के उत्सवों में वैभवपूर्ण रूप से अनेकानेक कैंकर्यों को स्वीकारते हुए, विजयदशमी के पर्व को अपनी विशेष गजवाहन पर विराजित होकर तिरुचानूर की पुरवीथियों में भक्तों पर कृपाकटाक्ष बरसाती हुई दर्शन प्रदान करती है। हमारे देश का हर गाँव, हर घर, हरदेहलीज देवी का शरन्नवरात्रि का पर्व बडे उमंग के साथ मनाती है। इसी प्रकार, दक्षिणभारत देश के अन्यान्य प्रांतों में 'अट्लतद्दि', 'ऊयलपंडुग', 'गोरिंटाकु पंडुग' जैसी विशेष पर्व छोटे-बडे सभी उल्लास के साथ मनाते हैं। इस पर्व के समय युवतियाँ सामूहिक रूप से मेहंदी लगाकर, झूलनों में झूलती हुई, उस दिन को दोसा का सेवन करती हैं। यह पर्व विशेषतया दक्षिण भारत के तेलुगु भाषियों का रोचक पर्व है।

'नव' के दो अर्थ हैं - नौ (संख्या) और 'नवीन' या 'नया'। - *'श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्। अर्चनंवंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्।।'* ये नवविधि भक्ति मार्ग के अनुसार, भगवान की लीलाओं का श्रवण एवं नामोच्चारण करना, उस परमात्मा की प्रशंसा में संकीर्तन करना, हर पल भगवान का स्मरण करते रहना, परमात्मा के चरण कमलों की सेवा में भक्ति एवं प्रपत्ति सहित रमजाना, सखा या मित्र की भांति उस भगवान के प्रति प्रेम का भाव रखना, तथा भगवान से शरणागति की कामना करते हुए अपने, जीवन को आध्यात्मिक पद्धति में सुखमय बनाना, हमारा लक्ष्य बनाना होता है।

जो बातें ऊपर कही गईं हैं, वे तो आध्यात्म संबंधी विषय हैं, अब जीवन शैली के लिए नवीनतर स्मरणीय रोचक विषय पर आयेंगे तो, अशुद्ध बातों को न सुनना, अनैतिक दुष्कर्मियों का यशोगान करने से बचना, सात्विक या सत्य पर अडिग रहना, बडे-बूढे, माता-पिता, गुरु को दैव समान मानकर उनकी सेवा करना, सद्गुणी एवं सदाचारियों से सत्संग में रहना, गुरूजी को, बडों को नमस्कार प्रदान करना, माता-पितरों को दासीभूत भाव से सेवा करना, सज्जन मित्रों से ही स्नेह पूर्वक व्यवहार करना, दूसरों से प्राप्त चीजों से तथा हमसे प्रदत्त चीजों को 'भगवान को समर्पित' मानकर अपनी जीवन में ये नौ नूतन विधिविधान को आदत व पालन करें तो हमारे जीवन में ये नूतन विधिविधानों से हमारा जीवन भी बहुसुंदर एवं सुखमय बनाने का प्रयत्न से शुभमय बनता है।

देवी की शरन्नवरात्रि के उत्सव के दौरान दुर्गामैया आशीर्वचन देकर हमें कृतार्थ करती है। अस्तु। पुराकथायें भी यही बताती है कि मैया ने दुष्टों का संहार किया तथा शिष्टों का उद्धार किया और इस रूप में नवरात्रि पर्व हमें विजयपरंपरा का मुख्य संदेश देकर शरणागति की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। हे पाठक एवं भक्त-चलिए हम सभी उपर्युक्त संदेश का पालन कर विजयगान करने का बीड़ा उठयें, जागो तथा आगे चलो। यह विश्वास के साथ चलिए आगे बढेंगे कि उप देवदेव का कृपा कटाक्ष हम भक्तों पर सदा रहेंगे।

अस्तु!

श्री वैद्यो नारायणो हरिः - टी.टी.डी. स्वास्थ्य और कल्याण के रूप में अपना आशीर्वाद बरसाता है।

मूल लेखक - श्री अत्ति रंगराजन अनुवादक - श्रीमती निषा सतीश

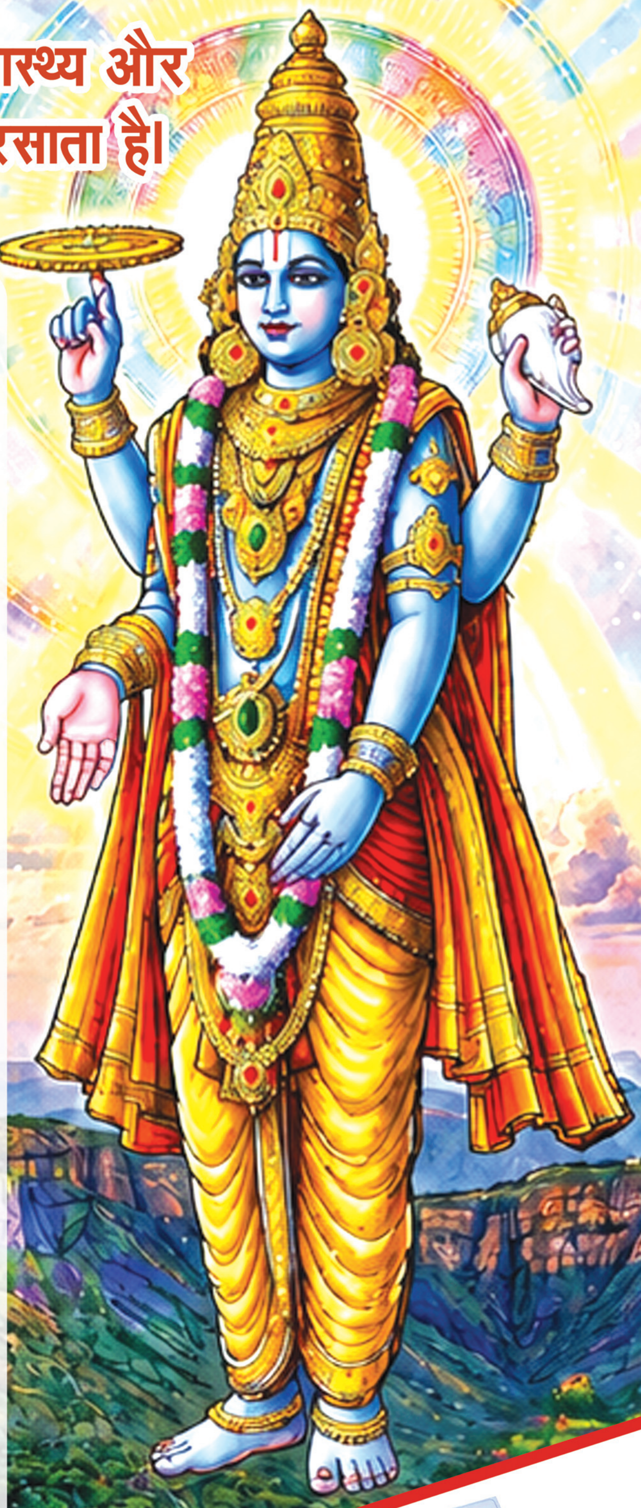

स्वास्थ्य ही धन है, यह कोई साधारण कहावत नहीं है जैसा कि यह दार्शनिक रूप से स्वस्थ रहने के महत्व की महत्वता पर जोर देता है। यह धन कमाने का सबसे सदाचारी और सबसे वांछनीय तरीका है।

आजकल खान-पान की गिरती क्वालिटी, प्रदूषित हवा और जीवनशैली से जुडी हुई बढ़ती बीमारियों के दौर में, सेहतमंद रहना सिर्फ एक विकल्प नहीं, बल्कि कई लोगों के लिए एक गहरी चाहत बन गया है।

ऐसी कई लोग हैं जो अपनी पुरानी बीमारियों से ठीक होने की उम्मीद में प्रतिदिन की जिन्दगी में मुट्ठी भर गोलियाँ खाते हैं, लेकिन असल में उन्हें जीवन भर दवाएँ लेनी पड़ती हैं।

'श्री वैद्योनारायणो हरिः'

यह एक पुरानी कहावत है कि डॉक्टर को साक्षात भगवान नारायण - यानी सबसे बड़े उपचारक के रूप में देखा और सम्मानित किया जाता है। उपरोक्त कथन डॉक्टर के महत्व पर जोर देते हैं और बताते हैं कि उन्हें स्वयं ईश्वर के समान सम्मान दिया जाता है।

हालांकि, इसका मूल अर्थ यह है कि भगवान नारायण स्वयं ही परम आरोग्य-प्रदाता हैं और सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा कोई अन्य नहीं है जो भक्तों के स्वास्थ्य और कल्याण की चिंता करते है। स्वस्थ रहना ईश्वर से मिलने वाला सबसे बड़ा आशीर्वाद है। भगवान वेंकटेश्वर कलियुग के सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान देवता हैं। वें न केवल सबसे अच्छे चिकित्सक हैं, बल्कि वे देवी लक्ष्मी से गरीबों और जरूरतमंदों को उनकी बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए जरूरी आर्थिक मदद भी प्रदान करवाते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान सिर्फ़ एक मंदिर प्रशासन संस्था ही नहीं है, बल्कि रोगियों तक चिकित्सा सुविधाएँ पहुँचाने में भी यह सबसे आगे रहा है। इंसानों के दुख-दर्द को कम करना हमेशा से ही टी.टी.डी. के (ऐजेंडा) कार्यसूची में रहा है। श्री वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (स्विम्स) SVIMS एक अत्याधुनिक उत्कृष्ट, शानदार हॉस्पिटल, 1993 में शुरू किया गया था और 1995 में इसे यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया गया।

टी.टी.डी. ने जरूरतमंद मरीज़ों की सेवा करने के साथ-साथ युवा डॉक्टरों को शिक्षित और प्रशिक्षित करके उन्हें इस पेशे में लाने के लिए यह अस्पताल स्थापित किया था। आज (स्विम्स) SVIMS गर्व के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के एक मात्र ऐसे अस्पताल के तौर पर खड़ा है, जिसे गरीबों के इलाज, अच्छी चिकित्सक शिक्षा और रिसर्च के क्षेत्र में 34 साल का अनुभव है। इसके 42 विभाग हैं जो 31 विशिष्टताओं में स्नातकोत्तर कोर्स कराते हैं।

इसे दक्षिण भारत के पहले महिला चिकित्सा महाविद्यालय और सबसे अच्छे 'स्टेट कोविड अस्पताल' आंध्रप्रदेश के नाम से प्रख्यात है, जिसने कोविड-19 महामारी का असरदार ढंग से सामना किया और एशिया का सबसे बड़ा डायलिसिस केन्द्र रहा है।

आंध्रप्रदेश में 19 से ज्यादा सालों से ऑन्कोलॉजी (कैंसर का इलाज) की सुविधा देने वाले एक मात्र संस्थान के तौर पर, (स्विम्स) SVIMS ने विकसित कैंसर अनुसंधान के लिए एक खास अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र भी बनाया है, जिसमें 300 बिस्तर और अत्याधुनिक उपकरण मौजूद हैं। यह राज्य द्वारा संचालित एक मात्र यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल है जिसे एन.ए.बी.एच.(नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एंड हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स) से मान्यता प्राप्त है। विस्तार के लिए सहयोग अहम है, इसलिए SVIMS ने एकेडमिक और आई बैंक गतिविधियों के लिए अरविंद आई हॉस्पिटल के साथ साझेदारी की है। इसी तरह, तिरुपति में टाटा के श्री वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर एंड एडवांस्ड रिसर्च (SVICCAR) के साथ भी रिसर्च के लिए साझेदारी की गई है।

मरीज़ों के लिए सेवाएँ

अस्पताल की पहुँच निसंदेह बहुत प्रभावशाली है। साल 2025 में, SVIMS ने 5,40,121 आउट-पेशेंट्स

और 64,681 इन-पेशेंट्स को सेवाएँ दीं, 21,000 सर्जिकल प्रक्रियाएँ कीं और 26,97,854 जाँचें कीं।

अस्पताल के निदेशक और कुलपति के नेतृत्व में अस्पताल ने पहला 'ट्रिपल ट्रांसप्लांट' किया। यह एक अनोखी उपलब्धि थी जिसमें एक ही जगह पर दिल, लिवर और किडनी का अंग-प्रत्यारोपण किया गया एक ऐसा कारनामा जो ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (AIIMS) में भी नहीं किया गया है।

गरीबों के लिए आशीर्वाद

आंध्रप्रदेश राज्य सरकार 'डॉ.एन.टी.आर. वैद्य सेवा' के जरिए मल्टी-स्पेशलिटी हेल्थ केयर के लिए आर्थिक मदद देती है। इस स्कीम में 3,713 पैकेज या प्रक्रिया शामिल हैं, जिसके तहत SVIMS ने 28,152 मरीज़ों की 129.75 करोड़ रुपये की सर्जरी कीं। उपरोक्त योजना के अंतर्गत न आने वाली प्रक्रियाओं के लिए, भगवान वेंकटेश्वर श्री वेंकटेश्वर प्राणदानम योजना के ज़रिए बीमार और गरीब मरीज़ों पर सीधे अपनी कृपा बरसाते है। इस साल TTD ने 2,292 लोगों की सर्जरी के लिए 11.23 करोड़ रुपये की धनराशि दी। सबसे गरीब लोगों के इलाज के लिए दिल खोलकर पैसे देकर, टी.टी.डी. ने सचमुच 'श्री वैद्यो नारायणो हरिः' (भगवान ही असली वैद्य हैं) का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

टी.टी.डी. के सहयोग से, SVIMS दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे बड़ी डायलिसिस सुविधा भी चलाता है, जिसे 2017 में शुरू किया गया था। इस सुविधा में पी.पी.पी. मोड के तहत 100 मेंटेनेंस डायलिसिस मशीनें और 25 एक्यूट डायलिसिस मशीनें लगाई गई हैं। अकेले 2025 में, 168 एच.डी.मशीनों के जरिए 139,256 हीमोडायलिसिस किए गए।

जब किसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना में मरीज़ की मौत हो जाती है और परिवार दुख में होता है, तो टी.टी.डी. एक बार फिर गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों की मदद के लिए आगे आता है और उन्हें शव ले जाने वाली गाड़ी (हियर्स सर्विस) की सुविधा मुफ्त देता है। यह सुविधा एक दिन में तीन शवों के लिए और आने-जाने में कुल 200 किलोमीटर की दूरी तक दी जाती है, जो शोक-संतप्त परिवारों के लिए निश्चित ही मददगार साबित होगी।

पिंक बस

कैंसर एक बहुत गंभीर बीमारी है और टी.टी.डी. ने इसे बहुत गंभीरता से लिया है। 2018 में, टी.टी.डी. के SVIMS ने रायलसीमा के ग्रामीण इलाकों तक पहुँचने के लिए एक 'पिंक बस' शुरू की। यह बस कैंसर और दूसरी गैर-संक्रामिक बीमारियों की एक साथ

जांच (स्क्रीनिंग) की सुविधा देती है। संभावित मरीजों की जल्द पहचान करने के लिए खास कैंप लगाए जाते हैं, ताकि उनका पूरा इलाज हो सके और उन्हें लंबी ज़िंदगी मिल सके। 2025 में, 264 कैंप लगाए गए और 12,102 मरीजों की जांच की गई।

चूंकि टीबी भी जानलेवा बीमारी है, इसलिए SVIMS 2007 से एक खास माइक्रोस्कोपी सेंटर चला रहा है, 2007 से, संशोधित राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम (RNTCP) के तहत, 31 दिसंबर 2025 तक 6,845 मरीज़ों का इलाज किया गया। SVIMS ग्रामीण इलाकों में खून इकट्ठा करने और मिर्गी व डायबिटिक हाइपरटेंशन के इलाज के लिए खास कैंप लगाता है।

BIRRD (बर्ड)

तिरुपति में स्थित 'बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ़ सर्जरी, रिसर्च एंड रिहैबिलिटेशन फॉर द डिसेबल्ड ट्रस्ट हॉस्पिटल' बर्ड (BIRRD) एक प्रमुख ऑर्थोपेडिक केयर सेंटर है, जिसे TTD ने 1985 में सेवाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया था। 300 बिस्तरों वाला यह अस्पताल बीपीएल श्रेणी के लोगों को मुफ्त इलाज और सर्जरी की सुविधा देता है। यहाँ अंगों की विकृति, रीढ़ की हड्डी की समस्याओं और सेरेब्रल पाल्सी का इलाज किया जाता है, साथ ही जलने या दुर्घटना के शिकार लोगों के अंगों को ठीक करने का काम भी होता है। यहाँ कृत्रिम अंग भी मुफ्त में दिए जाते हैं।

इसके निदेशक के नेतृत्व में, अस्पताल में ऑर्थोपेडिक्स, एनेस्थेसियोलॉजी (आधुनिक ऑपरेशन थिएटर) जैसे विभाग हैं, रेडियोलॉजी, क्लिनिकल लैबोरेटरी, ब्लड बैंक, फिजियोथेरेपी और कृत्रिम अंग लगाने के केंद्र इत्यादि है। अस्पताल इतना व्यस्त है कि वहाँ रोज लगभग 600 आउट-पेशेंट और 300 इन-पेशेंट का इलाज किया जाता है। हर दिन 25 से 30 बड़ी सर्जरी और 5 से 10 छोटी सर्जरी की जाती हैं। 1985 में 50 बिस्तरों के साथ शुरू हुआ यह अस्पताल आज 300 बिस्तरों वाली सुविधा बन गया है। पहले साल में सिर्फ 140 सर्जरी हुई थीं, जिनकी संख्या 2025 में बढकर 7,447 हो गई है।

श्री पद्मावती हृदयालया

जन्मजात हृदय रोगों से पीडित शिशुओं की बढती संख्या को देखते हुए, टी.टी.डी. ने अक्तूबर 2021 में 'श्री पद्मावती चिल्ड्रन्स हार्ट सेंटर' (जिस 'श्री पद्मावती

हृदयालय' भी कहा जाता है) शुरू किया, जिसका उद्देश्य बच्चों की हृदय सर्जरी करना है। 30 जून 2026 तक के मामलों के अनुसार, अस्पताल का नेतृत्व इसके निदेशक के द्वारा कर रहे हैं। 5,090 बच्चों की हार्ट सर्जरी और कैथेटर-आधारित हस्तक्षेप, जिनमें 26 हार्ट ट्रांसप्लांट सर्जरी शामिल हैं। यह आंध्रप्रदेश का एक मात्र ऐसा केन्द्र है जहाँ बच्चों के हृदय प्रत्यारोपण किए जाते हैं और यह भारत के प्रमुख एक्टिव हृदय प्रत्यारोपण कार्यक्रम में से एक है। प्राणदानम ट्रस्ट के सहयोग से, यह सेंटर जन्मजात और बाद में होने वाली दिल की बीमारियों के लिए पूरी जांच और इलाज की सुविधा देता है। इसमें नवजात शिशुओं के दिल के इलाज से लेकर जटिल सुधारात्मक सर्जरी, हार्ट ट्रांसप्लांट और कैथेटर-आधारित एडवांस्ड प्रक्रियाएँ शामिल हैं। बेहतरीन मेडिकल सेवा और सहानुभूतिपूर्ण देखभाल को मिलाकर, SPCHC हजारों बच्चों और उनके परिवारों की जिंदगी बदल रहा है और उन्हें उम्मीद, ठीक होने का मौका और एक बेहतर भविष्य दे रहा है।

श्रीवारि वैद्य सेवा

टी.टी.डी. ने हाल ही में 'श्रीवारि वैद्य सेवा' नामक एक नई योजना शुरू की है। जो प्रमुख चिकित्सा पेशेवरों को तिरुपति यात्रा के दौरान भगवान वेंकटेश्वर की निःशुल्क सेवा करने का अवसर प्रदान करती है। डॉक्टर इस योजना के तहत अपना नाम पंजीकृत करवाते हैं और अपने तय सूची के अनुसार तिरुमल में स्थित अश्विनी अस्पताल और तिरुपति में स्थित स्विम्स (SVIMS) और बर्ड (BIRRD) अस्पताल, श्री पद्मावती बाल बच्चों का हृदयालया और एस.वी.आयुर्वेदिक अस्पताल एवं एस.वी.गोशाला में इलाज करा रहे बहुत सारे मरीज़ों को परामर्श और (शल्य चिकित्सा) सर्जरी की सुविधाएँ दे सकते हैं।

पूरे भारत और कई दूसरे देशों के विशेषज्ञों भगवान वेंकटेश्वर के प्रति एक विनम्र योगदान के तौर पर इस योजना में हिस्सा लेने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। चिकित्सा विशेषज्ञ ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए क्लास ले सकते हैं और खास लेक्चर दे सकते हैं, जिससे मेडीकल स्टूडेंट्स (वैद्यकीय छात्र) को एक अनोखा मौका मिलता है। कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि टी.टी.डी. ने गरीबों को सम्मानजनक और बेहतर जीवन जीने में किस तरह चिकित्सा और आर्थिक सहायता प्रदान की है। टी.टी.डी. 'मानव सेवा ही माधव सेवा है' (इंसानों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है) के नारे में दृढ़ विश्वास रखती है।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

श्रीनिवास के द्वारा (कुलाल) भीम को साइज्य प्रदान करना :

राजा के द्वारा की गयी पूजा को राजा का समझकर दाद दिए बिना एक दिन मिट्टी के फूलों को हरि ने पूजा करते समय राजा को दिखाया। तब राजा ने उन मिट्टी के फूलों को देखा। राजा ने मन में ही सोचा "मैंने सुवर्ण के फूलों से पूजा की। ये मिट्टी के फूल यहाँ कैसे? किसने इन्हें चढाया है?" मन में इस संदेह के साथ तोंडमान ने हरि को नमस्कार करके पूछा। "हे परम पुरुष! मेरे द्वारा समर्पित पुष्पों को नीचे गिराकर मिट्टी के फूलों को यहाँ रखनेवाला मनुष्य कौन है? बताइए।" इस रूप में राजा के पूछने पर हँसते हुए हरि ने राजा से कहा। "हे महान! यहाँ से ढाई क्रोस की दूरी पर कुर्वक नामक एक गाँव है। वहाँ पर कुलाल नामक भीम अभिधान से प्रचलित मेरा एक महा भक्त हैं। वह बहुत गरीब है। वह प्रतिदिन मटकियाँ तैयार करके उन्हें ढेर के रूप में रखता था। प्रतिदिन मटकियाँ तैयार करते समय उंगलियों पर लगी मिट्टी को निकाल कर उस मिट्टी से फूल तैयार करके मेरी एक दारु मूर्ति तैयार करके उन फूलों से अतिशय भक्ति से मेरी अर्चना करता था। उन फूलों को मैं नित्य स्वीकार करता था।" हरि की इन बातों को सुन कर तोंडमान हरि की पूजा पूरा करके बिल मार्ग से शीघ्र ही उस भीम के पास पहुँचा। राजा को पास देखकर उस कुलाल ने पूछा। "हे राजा! महाद्भुत से आप एक शूद्र के घर आने का क्या काम है? आप आज्ञा दीजिए।" सुन कर राजा ने कहा। "हे भीम! शेषाचलपति निश्चित रूप से तुम्हारी भक्ति से संतुष्ट हुए हैं। तुम्हारी भक्ति की रीति के बारे में तुम अब मुझे स्पष्ट रूप से बताओ।" यह सुन कर कुलाल ने राजा से कहा। "हे राजा! मैं शूद्र जाति का हूँ। बहुत नीच काम करनेवाला हूँ। जड मनवाला हूँ। विष्णु भक्ति के बारे में मैं आपको क्या बता सकता हूँ? हे भूवरेण्य! मैं क्या आप को बता सकता हूँ?" कुलाल के इस रूप में बोलते समय आकाश मार्ग से गरुड़ पर आरूढ होकर श्रीनिवास भीम के रहने की जगह पर प्रेम से आए। "हे पुण्य पुरुष! आओ अब तुम को मैं

साइज्य प्रदान करता हूँ।'' इस रूप में हरि के कहने पर शीघ्र कुलाल ने हरि को नमस्कार किया। सति के साथ तभी हरि के पादों में साइज्य प्राप्त किया। इसे देख कर तोंडमान उद्वेलित हुआ।

श्रीहरि के तोंडमान को सारूप्य प्रदान करना :

तोंडमान ने हरि से इस रूप में कहा। ''हे तोयदाक्ष! मैं आप के भक्त भीम को देखकर आप्त से बात कर रहा था। तभी आप ने उसे परमपद प्रदान किया। मुझे कब आप ने साइज्य प्रदान करने के लिए सोचा है?'' इस रूप में तोंडमान के पूछने पर हँसते हुए हरि ने कहा। ''उस की सात्विक भक्ति से मैं संतुष्ट हो गया हूँ। इसलिए उसे साइज्य प्रदान किया है। उस सज्ञन ने मुझ से पहले ही मोक्ष मांगा था। मैंने उससे कहा था 'जब तुम्हारी पूजा के बारे में दूसरों को पता चलने पर, जब चक्रवर्ती तुम्हारे घर आयेगा, तब तुम को और तुम्हारी पत्नी को मैं मोक्ष प्रदान करूँगा।' इसलिए इस क्षण में ही उसे मैं ने मोक्ष प्रदान किया। इस के लिए तुम को चिंता नहीं करनी चाहिए। हे मानव नाथ! धैर्य के साथ तुम अपने पुत्र को राजा बनाओ। धीरता से विज्ञान, भक्ति, वैराग्य को धारण करके दुष्कामों से मुक्त होकर, निर्मल चित्त से, विजन स्थल पर पहुँच कर मेरा ध्यान करते रहो। तब शीघ्र ही तुम को मैं सारूप्य पद प्रदान करूँगा।''

इस रूप में हरि ने राजा को बताकर भेजा। बाद में तोंडमान अपने निजी वास पहुँचकर अपने पुत्र श्रीनिवास को बडे उत्साह से राजा बनाया। 'श्री वेंकटेश्वर के चरणारविंद का नित्य क्रम से उत्सव करते रहो।' ऐसा पुत्र को आदेश दिशा। तब तोंडमान तुर्य भक्ति, ज्ञानयुक्त होकर महाविरक्त बन कर वेंकटाद्री पर पहुँचकर एक विजन स्थल पर खडे होकर ध्यानयोग निष्ठ हुए। उस के कुछ दिनों के बाद अंबुजलोचन! उस राजा को स्वांतन से दाद देते हुए सत्कृपा से उस के पास जाकर विचित्र ढंग से हँसते हुए साथ में खडे हो गए। तब तोंडमान ने उन्हें देखा।

उठकर दोनों हाथ जोड कर विनम्र स्वर में सद्गुणों के साथ, मन में अचंचल भक्ति के होते, गद्गद स्वर में राजा की आँखों में आँसू भरते नमस्कार करते हुए ''हे सद्गुरु चंद्र! यहाँ पर मुझे मन में ही दर्शन करके पधारे हैं? हे परमात्मा! आप की महिमा के बारे में शेष भी बखान नहीं कर सकता है? मैं एक मानव मात्र हूँ। चपल आदमी हूँ। नीचात्मा हूँ। दुर्मति भी हूँ। आप की स्तुति कैसे कर सकता हूँ? मुझे क्षमा करने के स्वभाव से ही आप निर्हेतुक करुणा दिखाने आये हैं, मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं है। हे जगन्नायक! मैं कृतार्थ हो गया हूँ। पूर्व मेरे द्वारा हुए अपराधों को भूल कर, मेरी मूर्खता, गर्व को दूर कीजिए। एक पिता के रूप में मेरा उद्धार कीजिए, विज्ञान प्रदान करनेवाले आप के भले मानस के ऋण को मैं कैसे चुका सकता हूँ? श्री स्वामी! आप की सत्कृपा से ही मेरा इतने दिन उद्धार होता रहा। अब मुझे मोक्ष प्रदान करके मेरी रक्षा कीजिए!

दुर्मति होकर, विप्र की पत्नी को, पुत्र को, उसके बच्चे को वैसे ही मैंने मार दिया है। ऐसे पाप करनेवाली मेरी भीकर वृत्ति से मुझे भक्त करके मेरा उद्धार कीजिए। अधमों को बहुत जन्म देनेवाले तुम्हारी प्रशंसा करना शंभु को और ब्रह्म को भी संभव नहीं है। सति पति एक होने के कारण उस दिन रात को विवेकहीन होकर उस दिन आप के पास आया था। मेरे द्वारा हुए उस अपराध से भी आपने मुझे क्षमा की। इतना पुण्य किसी और को कैसे प्राप्त होगा? हे श्री पति! हे परात्पर! आप के समान कोई देवता और इस संसार में हो सकता है?'' इस रूप में अनेक प्रकार से विनति करने पर राजा की प्रशंसा करते हरि ने कहा।

"सुनो राजा! तुम को सात्विक विवेक की प्राप्ति के लिए तप करने के लिए कहा था। अब हे महापुरुषोत्तम! भक्ति निष्ठा अब तुम्हारे मन में स्थिर हो गयी है। अब कोई संदेह नहीं है। अब तुम्हें मोक्ष प्रदान करूँगा। मुझे परमात्मा के रूप में विश्वास करनेवाला विश्वास व्यर्थ नहीं जायेगा। हे जनवर! अब तुम ही बताओ कि कुछ दिन और इस भूतल में रहना पसंद करते हो? मोक्ष इस क्षण में ही चाहिए। तुम ही बताओ।" हरि के इस रूप में कहने पर नरनाथ ने कहा। "मोक्ष ही मुझे प्रदान कीजिए।" कहते शरणागति मांगनेवाले तोंडमान के पास चक्री हँसते हुए आये। तब हरि का करुणा-रस राजा पर बरसते समय आकाश से एक दिव्य पुष्पक विमान अद्भुत ढंग से वहाँ पर आया। तब तोंडमान को उस पुष्पक विमान पर बिठाकर हरि ने उसे सारुप्य प्रदान किया। उसे श्रीवैकुंठ भेज दिया। हरि अपने निजी वास पहुँच गए। तदुपरांत उस चक्रवर्ती का पुत्र वैभवपूर्ण ढंग से अपने पिता के परलोक कर्म पूरा किया। तदुपरांत श्रीनिवास के राजीव पाद युगल पर भूभार को रखकर व्यवहार करते हुए वसुदान के साथ मिलकर राज्य पालन करने लगा।

स्वयं व्यक्त अर्चाविग्रह स्वरूप श्री वेंकटेश्वर :

शेषाद्री पर नित्योत्सव, पक्षोत्सव, मासोत्सव, संवत्सरोत्सव को चलाते समय नारायण स्वयं शिला विग्रह के रूप में महा वैभवों को सदा स्वीकार करते रहे। वसुदान और श्रीनिवास आदर के साथ राज्य पालन करते रहे। हरि के प्रति अपार भक्ति दिखाते रहे। सकल कार्यों को हरि उन के स्वप्नों में ही बताकर मौन मुद्रा ही धारण करके पद्मावती के साथ मिल कर कृपा बरसाते रहे। अपने भक्तों को विविध वरदान देते रहे। साथ ही उन के धन को स्वीकार करते हुए शेषाद्री पर स्थिर रहे। विश्व भर में श्री वेंकटेश्वर के रूप में प्रसिद्ध हुए। भक्तों के भक्ति से देनेवाले धन को स्वीकार करते हुए उन की सारी मनौतियों को पूरा करते रहे। संकर जाति के भक्तों को बहुत धन देते थे। गर्व करते हुए धरती पर कुबेर के उधार को चुकाते रहे।

लीला मानुष श्री वेंकटेश्वर अनेक महिमाओं को दिखाते रहे। समस्त जनों के हितकारी बन कर उन की भलाई करते रहे। इस कलियुग में शेषाचल पर वास करते रहे। कलियुग के अंत में शीघ्र ही वैकुंठ लौट जायेंगे। कलियुग के बाद आनेवाले काल में फिर से माधव वेंकटाद्री पर पहुँचेंगे।

इस रूप में सूत ने वेंकटपति के महान चरित को सुनाने पर सारे मुनिगण अत्यंत आनंदित हुए। मन भर जाने से मोद से फिर से इस रूप में कहा। "आहा!

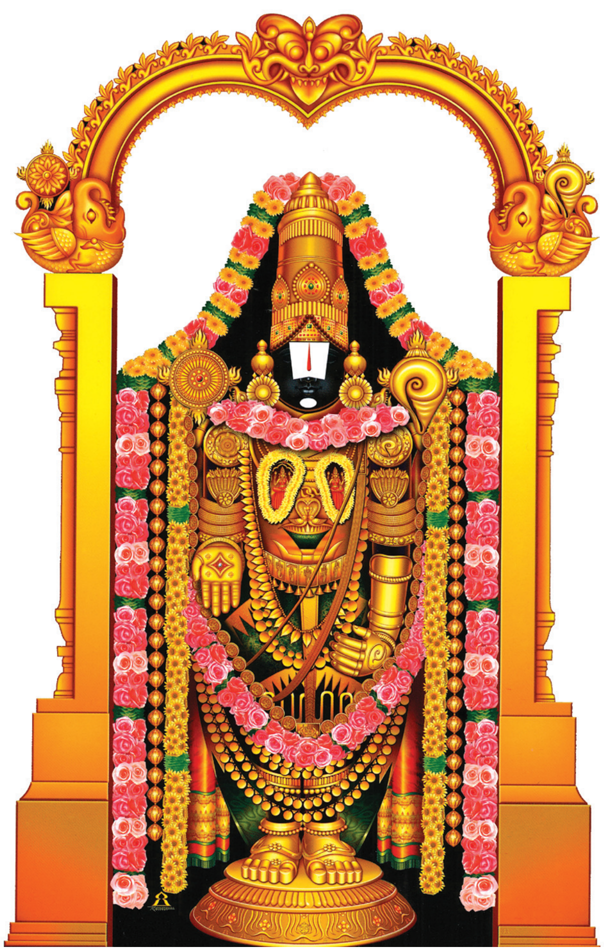

सूत! परात्पर! जलजातक्ष! श्री विष्णु! श्री यहिराट्पर्वत नाथ! अव्यय! सर्वात्मा! लीलार्थी बन कर धरती पर मनुष्य का रूप धारण करके, बाद में महा महात्मा पाषाण विग्रह बन कर भक्तों का उद्धार करनेवाली सत्कथाओं को क्रम से हमें सुनाया। हम ने भक्ति से सुना। हमें महदानंद हुआ। आप के बडप्पन के बारे में बता नहीं सकते। हमारे वश की बात भी नहीं है। हे महात्मा!''

इस रूप में महान शौनकादि मुनियों की प्रशंसाओं को सुन कर गौरव के साथ सूत ने इस रूप में कहा। ''सिंधु सुताधिपति पद्मलोचन! श्री वेंकटेश्वर के चरितगान करना किसी के वश की बात नहीं है। ब्रह्म के लिए भी यह संभव नहीं है। आप के कटाक्ष से तथा मेरी ऊहा में जो कुछ आया उसे आप को बताया।'' कहनेवाले सूत को देखकर मुनियों ने इस रूप में कहा। ''आदिमूल श्री महाविष्णु ने क्यों पाषाण विग्रह के रूप को धारण किया? इस का क्या कारण है?'' मुनियों की इन बातों को सुन कर सूत ने कहा। हे परमात्मा! श्रीहरि अपने स्वस्वरूप को सभी को नहीं दिखाते हैं।

इसलिए अपने चिह्नों को सर्वजनों के द्वारा दर्शन करके कृतार्थ होने के लिए कृपा से लोक जनों के लिए ताम्र, पाषाण, मृत्तिका, दारु मूर्तियों में दीपित होकर भूलोक में विविध रूपों में दर्शन देते हैं। साथ ही भक्तों की पूजाओं को स्वीकार करके भूरि दया से उन की मनौतियों को पूरा करते हैं। इस प्रकार के अर्चाविग्रह चिह्नों को देखकर, हरि चिह्न ऐसे होते हैं, समझ कर, जान कर, इन चर्म चक्षुओं से देखने पर विग्रह मनोदृष्टि को अपनी ओर खींचते हैं। तब हरि उन भक्तों के मनोमालिन्य को दूर करते रहते हैं।

इसलिए सर्वजनों को परमपद पाने के लिए अर्चाविग्रह प्रथम साधन हैं। इसलिए प्रतिमार्चन करके तद्वारा हरि को सर्वंतर्यामी जान कर, राम कृष्णादि विभवावतारों पर ध्यान, गुणानुभवों को प्राप्त करते रहना चाहिए। तद्वारा अनिरुद्ध,

संकर्षण, वासुदेव, व्यूह प्रभाव को जान कर ध्यान करके उन के नाम जप करके परम गति प्राप्त करने केलिए अर्चारूप ही हेतु बनते हैं। इसलिए सर्वजनों का संरक्षण करने के लिए श्रीनिवास ने स्वयं व्यक्त अर्चाविग्रह का रूप धारण किया। यह कहते सूत ने फिर से कहा।

जयमंगल :

''श्रृंगार पुरुष को जय मंगल, महिराज शैल मंदिरवाले को जय मंगल, श्री मंगापति को अतिशय शुभ मंगल सदा इस धरती पर हो।'' इस रूप में सूत के द्वारा स्तुति करने पर सुन कर शौनकादि मुनिगण उत्साह से वेंकटपति का यशगान करते सूत से प्रेम से शुभ गोष्टि वहाँ करते रहे।

आश्वांत :

हे भावजनक! शुभाकर! भावज रिपुमित्रा! भूत भावन! विलसत भावातीत! जगन्मय! श्री वेंकटगिरि निवेश! चिद चिदधीशा!

विकटसुररिपु हरणा! गुरुतर विश्वरक्षण कारणा! सकल मुनिजन हृदय कमल विचारणा! घनिवारणा!

मकुट कलित विलसित मणि घृणि मस्तकाखिल पूरणा! प्रकट कनक रुचिर शिखरयुत पन्नगाद्रि विहारणा! कर्मविधायक! कर्मविनाशक! कर्म फलाश्रित! शांतियुता! धर्म विवेचना! धर्म सुनूचना! धर्ममतव्रता! धर्महिता! मर्म सुखस्पदा! मर्मफल प्रदा! मर्मविलक्षण! मर्मरता! मर्मनगात्मक! मर्मगिरीश्वर! मर्ममयांबर! ब्रह्मसुता!

ज्ञानमार्ग दीपक! ज्ञानदिव्य रूपक! ज्ञानयोग रक्षक! ज्ञान विघ्नशिक्षक! ज्ञान सिद्धिदायक! ज्ञान शक्ति नायक! ज्ञान कर्म साधक! ज्ञान पूर्णबोधक!

सुर हृदय विकास! क्षुद्ररक्षो निरासा! गुरुतर सुविलास! कोटि सूर्य प्रबास! परमपद निवासा! पालिताचार्य दास! सुरुचिर दरहास! सुंदर श्रीनिवास!

गद्य :

यह श्री तरिगोंडा लक्ष्मी नृसिंह करुणा कटाक्ष कलित काव्य विचित्र वशिष्ट गोत्र पवित्र कृष्णयामात्य की पुत्री वेंगमांबा प्रणीत श्री वेंकटाचल माहात्म्य नामक भविषोत्तर पुराण में भीलनी की कथा, हरि के द्वारा धरणीदेवी को भविष्यवाणी सुनाना, धरणी देवी के द्वारा पद्मावती का आदर करना, पद्मावती के द्वारा माँ को हरि का वृत्तांत बताना, वकुला के आकर धरणीदेवी से संभाषण करना, आकाशराज के द्वारा हरि को शुभ पत्र भेजना, हरि के द्वारा लिखित रूप में आकाशराज को जवाब देना, वकुला के द्वारा शेषाद्री पहुँचकर हरि को शुभ समाचार देना, विवाह के लिए धन नहीं है, वकुला के द्वारा वराह स्वामी को यह बताना।

हरि से निमंत्रण पत्र लेकर गरुड़ के द्वारा सत्य लोक जाना, चक्री से निमंत्रण पत्र लेकर शेष के द्वारा शंकर को देना, श्रीनिवास के द्वारा इंद्रादि से संभाषण करना, सिरि का स्मरण करके हरि की चिंता करना, कोल्हापुरी वासी लक्ष्मी को सूर्य के द्वारा ले आकर हरि के पास छोडना, सिरि को हरि अपने कष्टों के बारे में बताना, हरि से सिरि का संभाषण, कुलदेवतार्चन, हरि के द्वारा कुबेर को उधार पत्र लिखकर देना, सायंकाल का वर्णन, चंद्रोदय वर्णन, सूर्योदय वर्णन, ब्रह्मादि के साथ श्रीनिवास का विवाह के लिए निकल पडना।

आकाशराज के द्वारा स्वामी को कन्यादान करना, विवाह के बाद हरि के द्वारा अगस्त्य आश्रम पर जाकर ब्रह्मादि को बिदा करना, श्री लक्ष्मी के द्वारा शीघ्र कोल्हापुर चले जाना, वसुदान और तोंडमान के द्वारा युद्ध की तैयारी करना, तोंडमान चक्रवर्ती को हरि अपना विश्वरूप दिखाना, श्रीनिवास के लिए विश्वकर्म के द्वारा दिव्य मंदिर बनाना, पद्मावती समेत हरि शेषाद्री पहुँचना, कूर्म का वृत्तांत, श्रीनिवास के द्वारा भीम को साइज्य प्रदान करना, तोंडमान को चक्री के द्वारा सारुप्य प्रदान करना नामक कथाओं से भरा पंचमाश्वास।

पंचमाश्वास समाप्त

क्रमशः

अगस्त-2026 महीने का क्विज-49 के समाधान

1) गरुड़वाहन सेवा, 2) महर्षि कश्यप,

3) अमृत, 4) सुदर्शन चक्र,

5) गरुड़, 6) हयग्रीव अवतार,

7) श्री वरलक्ष्मी व्रत, 8) ओणम,

9) श्रावण पूर्णिमा के दिन,

10) विखरम मुनि, 11) विनता,

12) माँ पद्मावती देवी,

13) श्रावण पूर्णिमा के दिन,

14) रोमशुर नामक बिल्ली को,

15) तिरुमल बलाजी / श्री वेंकटेश्वर.

तिरुमल भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी का अन्नप्रसाद

- श्री डी.राजकुमार

तरिगोंडा से तिरुमल आई परम योगिनी वेंगमांबा ने एक असहाय निर्धन विधवा होने के बावजूद यहाँ आने वाले दर्शनार्थी भक्तों को निःशुल्क भोजन करवाने की महान परंपरा का शुभारंभ किया था, इस महान परंपरा को आगे बढ़ाया गया आज हिंदू धर्म के सबसे बड़े मंदिर तिरुमल आनंदनिलयम की कस्टोडियन तिरुमल तिरुपति देवस्थान यानी टी.टी.डी. द्वारा लाखों भक्तों को निःशुल्क भोजन अन्न प्रसादम के रूप में करवाया जा रहा है।

यह सब महाविष्णु के अवतार परब्रह्म श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी की असीम कृपा के कारण ही संभव हुआ है। कलियुग के प्रत्यक्ष देव भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी कृपा सिंधु हैं।

''वेंकटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन।
वेंकटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।''

अन्नदान ही एक ऐसा दान है जिससे प्राणियों को पूर्ण संतुष्टि प्रदान की जा सकती है अन्य किसी भी दान से व्यक्ति संतुष्ट नहीं हो सकता।

प्रतिदिन पवित्र तिरुमल मंदिर में आने वाले हजारों भक्तों को मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया जाता है।

श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसादम ट्रस्ट :

पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री एन.टी.रामाराव ने तीर्थयात्रियों को मुफ्त भोजन उपलब्ध कराने के लिए 1985 में श्री वेंकटेश्वर नित्य अन्नदानम बंदोबस्ती योजना शुरू की थी। 1994 में यह योजना श्री वेंकटेश्वर नित्य अन्नदानम ट्रस्ट में बदल गई। फिर 2014 में इसका नाम बदलकर श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसादम ट्रस्ट कर दिया गया। इस ट्रस्ट को देश भर के लोगों से दान मिलता है।

भगवान वेंकटेश्वर का पर्वतीय निवास तिरुमल, मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों को प्रतिदिन लगभग तीन लाख निःशुल्क भोजन परोसता है। ऐसी दुनिया में जहाँ लाखों लोगों के लिए भूख आज भी एक कड़वी सच्चाई है, यह दुनिया के सबसे बड़े निःशुल्क भोजन कार्यक्रमों में से एक है।

6 अप्रैल, 1985 को नित्य अन्नदानम योजना के रूप में शुरू हुआ यह कार्य, तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) के श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसादम ट्रस्ट के अंतर्गत एक विशाल मानवीय उद्यम में तब्दील हो चुका है। यह तिरुमल तीर्थयात्रा के प्रमुख स्तंभों में से एक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक श्रद्धालु को ''अन्नदानम-महादानम'' की पुरानी भारतीय कहावत के अनुरूप, पौष्टिक भोजन निःशुल्क प्राप्त हो।

ये आंकडे कार्यक्रम की व्यापकता को दर्शाते हैं। जनवरी से मई 2026 के बीच, टी.टी.डी. ने अपने अन्नप्रसाद नेटवर्क

के माध्यम से 4.40 करोड़ से अधिक भोजन वितरित किए। अकेले मई माह में ही 92 लाख से अधिक भोजन वितरित किए गए, जो मंदिर नगर में तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ का प्रमाण है।

प्रतिदिन लगभग 70,000 श्रद्धालुओं को दूध, चाय और कॉफी परोसी जाती है, जबकि 60,000 से अधिक श्रद्धालुओं को नाश्ता मिलता है। लगभग एक लाख तीर्थयात्री दोपहर का भोजन करते हैं और 56,000 अन्य को रात का भोजन परोसा जाता है। मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसादम परिसर में ही प्रतिदिन 82,000 से अधिक भोजन परोसा जाता है, जिसे अक्षय रसोई, वैकुंठम क्यू-कांप्लेक्स परिसर, नारायणगिरि शेड़ और तिरुमल भर में फैले अन्य वितरण केंद्रों का सहयोग प्राप्त है।

प्रतिदिन एक विशाल लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन चलता रहता है। लाखों श्रद्धालुओं के लिए गुणवत्ता और निरंतरता बनाए रखने के लिए लगभग 15.8 टन चावल, 2,861 किलोग्राम दालें, 3,110 किलोग्राम खाद्य तेल, गेहूं उत्पाद और अन्य सामग्री का उपयोग किया जाता है।

बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए टी.टी.डी. ने आधुनिकीकरण भी किया है। 2024 में शुरू हुई वकुलमाता केंद्रीकृत रसोई से 28 और स्थानों तक भोजन वितरण का विस्तार हुआ है, जबकि पी.ए.सी.-5 में नए भोजन कक्ष में एक समय में 1,500 श्रद्धालु बैठ सकते हैं। एक पूर्णतः स्वचालित उपग्रह रसोई, जो प्रतिदिन दो लाख तीर्थयात्रियों के लिए भोजन तैयार कर सकती है, निर्माणाधीन है।

2,460 करोड़ रुपये से अधिक की स्थायी जमा राशि के साथ, अन्नप्रसादम ट्रस्ट महज एक

धर्मार्थ भोजन कार्यक्रम से कहीं अधिक विकसित हो चुका है। यह वास्तव में पहाड़ी पर स्थित एक ''अक्षय पात्र'' है। पोषण का एक निरंतर प्रवाह जो प्रति वर्ष करोड़ों भक्तों को भोजन प्रदान करता है और आस्था से प्रेरित सार्वजनिक सेवा का एक व्यापक रूप से प्रशंसित आदर्श है।

तिरुमल में मिनरल वाटर प्लांट लगाने की अनुमति दी गई है। ''इस प्लांट की क्षमता प्रतिदिन एक लाख लीटर शुद्ध और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की होगी और तीर्थयात्रियों को प्रति लीटर केवल एक रुपये का भुगतान करना होगा।''

तिरुमल तीर्थयात्रा में टी.टी.डी. ने स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने को विशेष महत्व दिया है ताकि दिव्य आशा और आशीर्वाद लेकर आने वाले तीर्थयात्रियों को बीमारियों और कठिनाइयों से बचाया जा सके। विशेष रूप से स्वाइन फ्लू और डेंगू बुखार के बढ़ते खतरे को देखते हुए, टी.टी.डी. ने तिरुमल में प्लास्टिक की बोतलों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। वर्तमान श्रीवारि ब्रह्मोत्सव के दौरान तिरुमल भर में कियोस्क मिशिन और स्वच्छ पेयजल आपूर्ति केंद्रों की स्थापना के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

तिरुमल में अन्नप्रसाद :

प्रकृति में जीवों को सर्वोत्तम पदार्थ निःशुल्क प्रदान किया है जल, वायु, अग्नि इत्यादि निःशुल्क है।

जीवन की सर्वोत्तम चीज़ें निःशुल्क होती हैं, यह कहावत तिरुमल में परोसे जाने वाले प्रसाद के अनुभव से सचमुच सिद्ध हो जाती है। यह ऐसा भोजन नहीं है जो केवल शरीर को ही तृप्त करता है, बल्कि आत्मा को भी तृप्त करता है। जब कोई व्यक्ति हर संभव मार्ग से उमड़ती हुई भीड़ के बीच से होकर एक पल के लिए सर्वशक्तिमान के दर्शन कर पाता है, तो प्रत्येक भक्त की आस्था का वह दृश्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अन्नप्रसादम :

पाँच वर्षों में सुविधाओं में ज़बरदस्त सुधार हुआ है। कर्मचारियों के साथ-साथ स्वयंसेवी सेवकों का विशेष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए, जो निस्वार्थ भाव से हमारी सेवा और सहायता करते हैं। यह देखकर अद्भुत लगता है कि एक आम आदमी दूसरे की मदद करने के लिए तत्पर है।

शरीर और आत्मा को पोषण देने वाले भोजन की बात करें तो, तरिगोंडा वेंगमांबा केंद्र में परोसा जाने वाला प्रसाद एक दिव्य अनुभव है।

हम सभी भले ही मूर्ति में भगवान के दर्शन न कर पाएँ, लेकिन हममें से प्रत्येक व्यक्ति उस भोजन में उन्हें देख सकता है जो हमें प्रतिदिन पोषण देता है।

राज वेंगनेश फाउंडेशन के उदार अनुदान से निर्मित इस नए केंद्र ने इसे अत्यंत कुशल बना दिया है। हमें उस विशाल रसोईघर की आंतरिक कार्यप्रणाली देखने को नहीं मिलती जो हमें भोजन उपलब्ध कराता होगा, लेकिन भोजन की मात्रा और गुणवत्ता को देखते हुए यह स्पष्ट है कि इसे बहुत ही प्रभावी ढंग से और कड़े मानकों के साथ प्रबंधित किया जाता होगा।

यह जगह साफ-सुथरी और अच्छी तरह से व्यवस्थित है, और काफी बड़ी है। डाइनिंग हॉल में प्रवेश के लिए लगभग कोई प्रतीक्षा समय नहीं होता, सिवाय भीड़भाड़ वाले दिनों के। अंदर आते ही, आपको चमकदार स्टील की मेजों और कुर्सियों की कतारें देंगी, जिन पर केले के पत्ते बिछे होंगे और चटनी, करी और मिठाई परोसने के लिए तैयार होंगे। फिर ट्रॉली में गरमागरम चावल आते हैं।

उसके बाद गरमागरम सांभार परोसा जाता है। बस हमें सतर्क रहना चाहिए और उनकी गति के लिए तैयार रहना चाहिए। पांच मिनट के भीतर रसम परोसी जाती है। सब कुछ लाजवाब है, लेकिन अगर मुझे एक व्यंजन चुनना हो, तो वह रसम होगी। खट्टा और मसालेदार का संतुलित मिश्रण एकदम सही है।

एक संपूर्ण और पौष्टिक भोजन जो किसी आशीर्वाद के समान प्रतीत होता है।

तिरुमल में 'अन्नप्रसादम' (निःशुल्क भोजन वितरण) की शुरुआत 1 अप्रैल 1994 को श्री वेंकटेश्वर नित्य अन्नदानम ट्रस्ट के रूप में हुई थी।

इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि तिरुमल आने वाला कोई भी भक्त भूखा न रहे। 2011 में आधुनिक मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसादम कॉम्प्लेक्स (MTVAC) बनने के बाद से यह सेवा और भी बड़े पैमाने पर चल रही है।

अन्नप्रसादम का विकास और मुख्य पड़ाव :

1994 : श्री वेंकटेश्वर नित्य अन्नदानम ट्रस्ट की स्थापना।

2011 : अत्याधुनिक एम.टी.वी.ए.एसी. (MTVAC) भवन का उद्घाटन, जिससे हजारों भक्तों को एक साथ भोजन मिलने लगा।

2014 : ट्रस्ट का नाम बदलकर 'श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसादम ट्रस्ट' कर दिया गया।

वर्तमान स्थिति :

यह दुनिया के सबसे बड़े मुफ्त भोजन कार्यक्रमों में से एक है, जहाँ प्रतिदिन लगभग 1.80 से 2 लाख भक्तों को सात्विक भोजन कराया जाता है।

भोजन वितरण के प्रमुख स्थान :

मुख्य अन्नप्रसादम कॉम्प्लेक्स (MTVAC), वैकुण्ठम कतार परिसर (Vaikuntham Queue Complexes) और विभिन्न विश्राम गृह (PAC) तिरुपति और आस-पास के अन्य टी.टी.डी. केंद्रों व अस्पतालों में भी इसका विस्तार किया गया है।

तिरुमल :

तिरुमल तिरुपति देवस्थान (TTD) के एस.वी.(श्री वेंकटेश्वर) अन्नप्रसादम ट्रस्ट ने श्री वेंकटेश्वर मंदिर में आने वाले भक्तों को निःशुल्क, स्वच्छ और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए

एक दिवसीय दान योजना शुरू की है। दानकर्ता व्यक्तिगत रूप से अन्नप्रसादम परोस सकते हैं।

टी.टी.डी. ने घोषणा करते हुए कहा कि, भक्त वेंगमांबा अन्नप्रसाद भवन में अन्नप्रसादम वितरण के पूरे दिन को प्रायोजित करने के लिए 44 लाख रुपये का दान कर सकते हैं। दानकर्ता का नाम उस दिन वेंगमांबा अन्नप्रसादम परिसर में प्रदर्शित किया जाएगा और दानकर्ताओं को अपनी पसंद के अनुसार एक दिन के लिए अन्नप्रसादम परोसने का अवसर भी प्राप्त होगा।

इस योजना की मुख्य विशेषताएँ कुछ इस प्रकार से हैं... दानकर्ता को एक दिन के पूर्ण अन्नप्रसादम के लिए 44 लाख रुपये का योगदान कर सकते हैं।

इसी तरह, दानकर्ता सुबह के नाश्ते के लिए 10 लाख रुपये, दोपहर के भोजन के लिए 17 लाख रुपये और रात के खाने के लिए 17 लाख रुपये का योगदान दे सकते हैं।

इस पहल का उद्देश्य परोपकारी योगदान को बढ़ावा देना है।

साथ ही यह भी सुनिश्चित करना है कि, मंदिर की सेवा परंपरा के हिस्से के रूप में लाखों तीर्थयात्रियों को निःशुल्क प्रसादम मिले।

श्री वेंकटेश्वर गोसंरक्षण शाला में संपन्न 'गोकुलाष्टमी - गोपूजा' महोत्सव

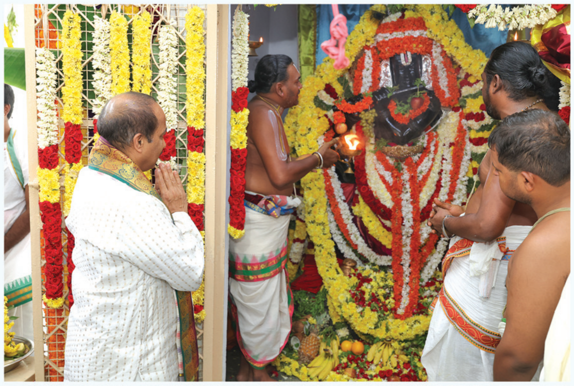

दि.04-09-2026 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. का श्री वेंकटेश्वर गोसंरक्षण शाला में 'गोकुलाष्टमी - गोपूजा' महोत्सव के अवसर पर अर्चकगण शास्त्रोक्त रूप से विशेष पूजाएँ संपन्न किया गया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री एम.रविचंद्रा, आई.ए.एस., जी ने गोशाला में स्थित श्री वेणुगोपाल स्वामीजी को दर्शन कर विशेष पूजा कार्यक्रमों में भाग लिया। इस संदर्भ में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम भक्तों को आकर्षित किया। इस कार्यक्रम में तिरुपति एम.एल.ए., श्री आरणि श्रीनिवासुलु, ति.ति.दे. बोर्ड के सदस्य श्री जी.भानुप्रकाश रेड्डी, ति.ति.दे. का जे.ई.ओ. (विद्या और वैद्य) श्री प्रभल गोपिनाथ, आई.ए.एस., गोशाला के निदेशक श्री शिवकुमार आदि अधिकारीगण के साथ भक्तगण भी भाग लिया।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

तिरुक्कोड़ि - तिरुनाल तो वर्ष में तीन या चार बार मनाये जाते थे। इस संदर्भ में गरुड़ ध्वज का फ़हराना भी होता था। ये उत्सव तमिल पंचांग मास पुरट्टासि, चित्तिरै, आड़ि और मार्गळि महीनों में मनाये जाने की सूचनाएँ मिलती हैं। इनमें मार्गळि उत्सव का प्रावधान तो राजकुमारी सामवाय ने ही किया था। विजयनगर राजवंश के स्थापित होने के साथ-साथ दो और नये उत्सव भी इनसे जुडे हैं। उनमें एक मासी महीने में हरिहर राय - II के नाम पर मुळै तिरुवेंकट जीयर द्वारा जनवरी 1388 ई. में (संख्या 185 एवं संख्या 186) और एक आश्वयुज महीने में देवराय - II स्वयं भगवान के दर्शनार्थ 5 दिसंबर 1429 ई. को आये और 2200 वरहों का मूल धन निक्षेपित किया है। उनके आदेश के अनुसार यह उत्सव पुनर्वसु नक्षत्र से आरंभ होकर स्वाति नक्षत्र तक मनाना निर्धारित है (संख्या 192)। आश्वयुज (आश्वीज या अगहन) महीना तमिल मास पुरट्टासि से मिलता है। वास्तविक रूप में उत्सव का आरंभ श्रवणा नक्षत्र में होता है, आश्वयुज मास शुक्ल पक्ष में। इससे यह स्पष्ट होता है कि देवराय - II के द्वारा आरंभ किया गया उत्सव पुनर्वसु नक्षत्र का है, अतः वह आश्वयुज मास के कृष्ण पक्ष में चलाया गया है। इस प्रकार उत्सवों की संख्या 5 या 6 हो गयी। कुछ परिलेखों से 7 उत्सवों को मनाने का उल्लेख भी मिलता है। ये सात उत्सव श्री वेंकटेश्वर भगवान से संबन्धित हैं। वैकाशी और आणि उत्सव तो श्री गोविंदराज स्वामी से संबन्धित हैं। कुल मिलाकर 9 उत्सवों का उल्लेख हमें मिलता है (संख्या 213, 215 और 220)। संख्या 215 तो 7 उत्सवों की गिनती देता है। ये आड़ि मास से आरंभ होकर चित्तिरै मास तक चलनेवाले 7 उत्सवों का उल्लेख करता है। लेकिन दाताओं द्वारा संपन्न होनेवाले उत्सवों का आरंभ पंगुणि उत्सव से होने की बात हमारे सामने उठाता है। लेकिन किसी भी परिलेख (अभिलेख) में वास्तविक धरातल पर ये उत्सव कब मनाये जाते हैं, इस का कोई सही संकेत नहीं है। संभवतः आड़ि, पुरट्टासि 2 उत्सव मार्गळि में, मासि, पंगुणि और चित्तिरै महीनों में 5 उत्सव - कुल मिलाकर 7 उत्सव श्री वेंकटेश्वर भगवान से संबन्धित हैं। वैकाशी और आणि महीनों में संपन्न किये जानेवाले उत्सव श्री गोविंदराज स्वामी से संबन्धित उत्सव हैं।

इन उत्सवों के लिए दाताओं ने, जिन्होंने इनका आरंभ किया था, मूलविराट के लिए भी प्रसाद समर्पण के लिए प्रावधान अवश्य किया था। ये प्रावधान उत्सवमूर्तियों को मिलाकर थे। उत्सवमूर्तियों के लिए मंटपों की व्यवस्था पुष्पवाटिकाओं में हुई। यह व्यवस्था उत्सव दिनों, 9 या 10 दिनों के लिए विशेष रूप से थी।

मूलविराट (मूलमूर्ति) तथा ऊपर उल्लिखित सात उत्सवों के अलावा कुछ अन्य संदर्भों के लिए भी कुछ दाताओं ने देवदान प्रस्तुत किये। तिरुपति के श्रीवैष्णवों में एक मुदलियार तिरुक्कलि-कन्निदासर अळगप्पिरानार ने जो तिरुमल के स्थानत्तार भी थे, 4000 नार्पणम् का दान तिरुवेंकटम् - उडैयान के लिए शक संवत्सर 1356 में (सन् जुलाई 1434 ई.) में दिया था। यह समर्पण भगवान को संधि समर्पण के रूप में था। इससे मिलनेवाली आमदनी से (सूद से) दक्षिणायन काल में निवेदन प्रस्तुत करते हैं। ये आड़ि मास के आरंभ से लेकर मार्गळि मास के अंत तक संपन्न किये जाते हैं। ये समर्पण 6 महीने पर्यन्त चलते हैं (15 जुलाई से लेकर 15 जनवरी तक)। यह प्रातःकाल संधि के रूप में मनाया जाता है। इसमें गंधबिलाव से प्राप्त सुगंध पदार्थ का भगवान की मूर्ति पर लेपन और कर्पूर नीराजन आदि उदयकालिक सेवाएँ संपन्न होती हैं (सं. 207)।

चार अन्य दाताओं ने भी 400 चक्र - पणम् का देवदान समर्पण किया है। यह शक संवत्सर 1367 में (13 दिसंबर 1445 ई. में) हुआ है। यह देवदान उत्तर-पडि सेवा श्री गोविंदराज पेरुमाल के लिए तथा रोहिणी पडि श्रीकृष्ण के लिए था। उत्तरा और रोहिणी दो नक्षत्र हैं और हर महीने के संदर्भ में यह समर्पण होता है। इसके साथ-साथ एक तिरुक्कणामडै गोविंदराज के लिए था, जो तिरुप्पल्लि - एळुच्चि के रूप में मार्गळि मास में 30 दिनों की सेवा होती है (संख्या 212)।

मुल्लै तिरुवेंकट जीयर ने शक संवत्सर 1312 में (8 दिसंबर, 1390) 1200 पणम् का एक निवेश समर्पित किया है। यह तिरुवोलक्कम् निवेदन के लिए था। यह तिरुप्पावै गान के लिए था। यह मार्गळि मास में 10 दिनों के समय में हर रोज निवेदन के लिए उत्सवमूर्तियों के लिए हैं - मलै-किनियनिन्र-पेरुमाल और नाच्चियारों के लिए है जो तिरुमल उत्सवों में उत्सवमूर्तियाँ हैं। यह एक अप्प-पड़ि और एक तिरुक्कनामडै शात्तुमुरै (अंतिम) दिन के लिए समर्पित हैं। इतना ही नहीं इस अनुदान का उपयोग तिरुप्पावै गान के दस दिनों में गोविंदराज स्वामी के लिए भी है। यह मार्गळि मास में अध्ययनोत्सव के संदर्भ में संपन्न होता है (संख्या 187)। इससे यह भी सूचित होता है कि दोनों मंदिरों में अध्ययनोत्सवम् मात्र दस दिन का उत्सव है।

आत्रेय गोत्रज सायन्नगल के पुत्र और शांतप्प नागप्पनन् के छोटे भाई गिरिदेवप्पगल ने तिरुमल के लक्ष्मी-नारसिंहन्-मंटपम् और नंदनवनम् के लिए 600 पणम् मंदिर में अर्पित किये। यह शक संवत् 1326 (18 दिसंबर 1404 ई. में) हुआ था। इसके अनुसार एक अप्प-पड़ि का निवेदन हर उत्सव के सातवें दिन में निवेदित करना था। इतना हीं नहीं एक तिरुवोलक्कच्चिरपु को कोडै-तिरुणाल् में उत्सवमूर्तियों को मंटपम् (सं. 191) के पास अर्पित भी करना था।

क्रमशः

20-10-26 को विजयदशमी के संदर्भ में...

विजयदशमी (दशहरा) पर्व

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

विजयदशमी (दशहरा) आश्वयुज मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाने वाला एक प्रमुख हिंदू त्योहार है।

आश्वयुज माह के कृष्ण पक्ष की दशमी को माता दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था और भगवान श्रीराम ने दशानन रावण का वध किया था।

यह पर्व अधर्म पर धर्म और असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है। यह अच्छाई की बुराई पर जीत का दिन था। इसलिए इस दिन दशहरा और विजयदशमी का पर्व मनाया जाता है। यानी इस दिन, दिन में आयुध पूजा के साथ माता दुर्गा और श्रीराम की पूजा होती है और रात को रावण दहन करके विजयोत्सव मनाया जाता है।

दशहरा की कथा :

वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या के राजकुमार श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास हुआ। उनके साथ उनका भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता भी वन में रहते थे। एक दिन माता सीता का अपहरण करके रावण अपने देश लंका ले गया था। भगवान राम ने ऋष्यमूक पर्वत पर आश्विन प्रतिपदा से नवमी तक आदिशक्ति की उपासना की थी। इसके बाद भगवान श्रीराम इसी दिन किष्किंधा से लंका के लिए रवाना हो गए। प्रभु श्रीराम ने हनुमान, सुग्रीव, जांबवंत, अंगद और विभीषण की मदद से लंका पर हमला कर दिया। राम और रावण के बीच भयानक युद्ध हुआ। दशमी के दिन श्रीराम ने रावण का वध कर दिया। रावण का वध करने के बाद से ही यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत की खुशी में मनाया जाता है।

विजयदशमी की कथा :

रम्भासुर का पुत्र था महिषासुर, जो अत्यंत शक्तिशाली था। उसने कठिन तप किया था। ब्रह्माजी ने प्रकट होकर कहा- 'वत्स! एक मृत्यु को छोड़कर, सब कुछ मांगों। महिषासुर ने बहुत सोचा और फिर कहा- 'ठीक है प्रभो। देवता, असुर और मानव किसी से मेरी मृत्यु न हो। किसी स्त्री के हाथ से मेरी मृत्यु निश्चित करने की कृपा करें।' ब्रह्माजी 'एवमस्तु' कहकर अपने लोक चले गए। वर प्राप्त करने के बाद उसने तीनों लोकों पर अपना अधिकार जमा कर त्रिलोकाधिपति बन गया। तब भगवान विष्णु ने सभी देवताओं के साथ मिलकर सबकी आदि कारण भगवती महाशक्ति की आराधना की। सभी देवताओं के शरीर से एक दिव्य तेज निकलकर एक परम सुन्दरी स्त्री के रूप में प्रकट हुआ। हिमवान ने भगवती की सवारी के लिए सिंह दिया तथा सभी देवताओं ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र महामाया की सेवा में प्रस्तुत किए। भगवती ने देवताओं पर प्रसन्न होकर उन्हें शीघ्र ही महिषासुर के भय से मुक्त करने का आश्वासन दिया। भगवती दुर्गा हिमालय पर पहुँची और अट्टहासपूर्वक घोर गर्जना की। महिषासुर के असुरों

के साथ उनका भयंकर युद्ध छिड़ गया। एक-एक करके महिषासुर के सभी सेनानी मारे गए। फिर विवश होकर महिषासुर को भी देवी के साथ युद्ध करना पड़ा। महिषासुर ने नाना प्रकार के मायिक रूप बनाकर देवी को छल से मारने का प्रयास किया लेकिन अंत में भगवती ने अपने चक्र से महिषासुर का मस्तक काट दिया। कहते हैं कि देवी कात्यायनी को ही सभी देवों ने एक एक हथियार दिया था और उन्हीं दिव्य हथियारों से युक्त होकर देवी ने महिषासुर के साथ युद्ध किया था।

विजयदशमी के दिन विशेष पूजा आराधन :

(1) प्रभु श्रीरामचन्द्रजी की पूजा :

विजयदशमी के दिन भगवान श्रीराम की विशेष पूजा का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि इसी दिन उन्होंने लंकापति रावण का वध कर धर्म की स्थापना की थी। उत्तर भारत और कई क्षेत्रों में इस दिन श्रीराम दरबार की पूजा मुख्य रूप से की जाती है।

पूजाविधि का स्थान और समय : सुबह या दोपहर (विजय मुहूर्त) में घर के मंदिर या साफ चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाएँ। उस पर भगवान श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण जी और हनुमान जी (राम दरबार) की मूर्ति या तस्वीर स्थापित करें।

पवित्रिकरण और संकल्प : गंगाजल छिड़ककर स्वयं को और पूजा स्थान को पवित्र करें। हाथ में जल और अक्षत लेकर भगवान राम के सामने अपनी मनोकामना पूर्ति का संकल्प लें।

पंचोपचार / षोडशोपचार पूजन - आह्वान : हाथ जोड़कर प्रभु श्रीराम का ध्यान करें। राम दरबार के सभी विग्रहों को चंदन, कुमकुम और अक्षत (चावल) का तिलक लगाएँ। भगवान राम को पीला वस्त्र या कलावा (मौली) अर्पित करें। तुलसी दल (तुलसी के पत्ते) के साथ पीले फूल या गेंदे के फूलों की माला अर्पित करें। (याद रखें, भगवान राम की पूजा में तुलसी अनिवार्य है)। घी का दीपक और धूपबत्ती जलाएँ। भगवान राम को बूंदी के लड्डू, खीर या ऋतु फल (जैसे केला, सेब) का भोग लगाएँ।

आरती और क्षमा प्रार्थना : कपूर या दीपक से ''श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन...'' या ''आरती कीजै श्रीरामचंद्र की'' गाकर आरती करें। पूजा में हुई किसी भी भूल के लिए हाथ जोड़कर क्षमा मांगें।

(2) शमी वृक्ष पूजन माहात्म्य :

विजयदशमी (दशहरा) के दिन सायंकाल शमी वृक्ष के पूजन का विशेष धार्मिक, पौराणिक और ज्योतिषीय महत्व है। इस दिन शमी के पेड़ की पूजा करने से व्यक्ति को कार्यों में विजय, साहस, यश और समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा सभी प्रकार के पाप व संकट दूर होते हैं।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व :

भगवान राम की विजय : पौराणिक कथाओं के अनुसार, लंका पर आक्रमण करने से पहले भगवान श्रीराम ने लंका विजय की कामना के लिए शमी वृक्ष का पूजन किया था।

महाभारत काल व पांडव : पांडवों ने अपने अज्ञातवास के अंतिम वर्ष में अपने अस्त्र-शस्त्र शमी के वृक्ष पर

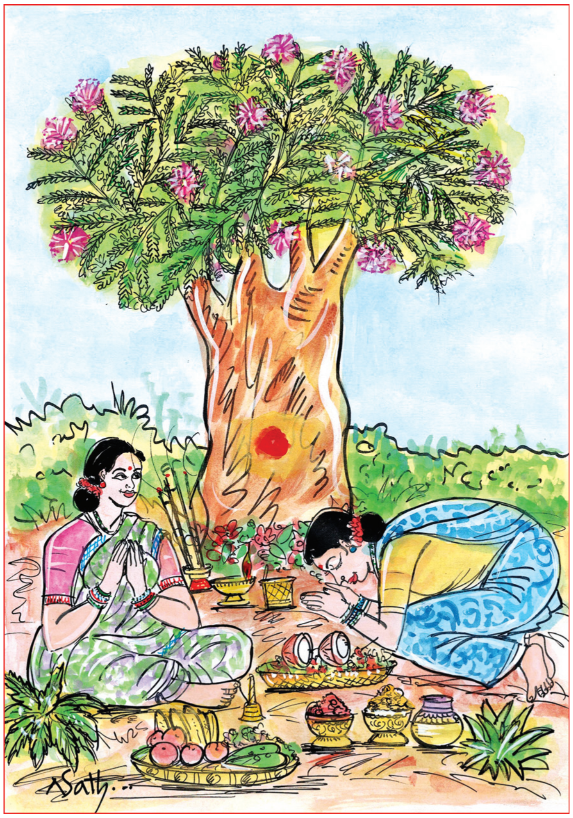

ही छुपाए थे और विजयदशमी के दिन उनकी रक्षा व पूजन किया था, जिसके बाद उन्हें युद्ध में विजय मिली। ज्योतिषीय महत्व शमी वृक्ष का संबंध न्याय के देवता भगवान शनिदेव से माना जाता है। दशहरे के दिन शमी पूजन करने से शनि के बुरे प्रभाव, ढैय्या या साढ़ेसाती के कष्ट शांत होते हैं।

पूजन की सरल विधि जल अर्पण : प्रदोष काल (शाम के समय) में शमी के वृक्ष के पास जाएँ और उसकी जड़ में शुद्ध जल अर्पित करें। वृक्ष को रोली, अक्षत, कुमकुम, हल्दी और पुष्प अर्पित करें। कलावा (रक्षा सूत्र) को वृक्ष के तने पर 5 या 7 बार लपेटें। सरसों के तेल या तिल के तेल का दीपक जलाकर आरती करें। पूजन के समय शमी के इस मंत्र का पाठ करें :

शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।

अर्जुनस्य धनुर्धारी रामस्य प्रियदर्शिनि।।

पूजा के पश्चात शमी की पत्तियों को स्वर्ण (सोने) के समान मानकर एक-दूसरे को आदान-प्रदान किया जाता है और बड़ों का आशीर्वाद लिया जाता है।

(3) अपराजिता देवी का पूजन :

विजयदशमी के दिन माँ अपराजिता का पूजन करने की भी परंपरा है।

अपराजिता देवी की पूजा विधिस्थान : घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) को साफ करके अष्टदल चक्र (कमल का फूल) बनाएँ। अष्टदल के बीच में 'अपराजितायै नमः' मंत्र का ध्यान कर देवी का आह्वान करें। रोली, अक्षत (चावल) और फूल अर्पित करें। पूजा के अंत में देवी से विजय और रक्षा की प्रार्थना करें। अपराजिता माताजी के पूजन से यश और बल कि प्राप्ति होती है।

(4) शस्त्र, उपकरण एवं वाहन पूजन : इस दिन अपने घर के अस्त्र-शस्त्र या कार्य में उपयोग होने वाले औजारों व वाहनों को साफ करके उन पर गंगाजल छिड़कें। उन पर हल्दी, चंदन और कुमकुम का तिलक लगाकर फूल चढ़ाएँ तथा सुरक्षित रहने की कामना करें।

विजयदशमी का संदेश :

विजयदशमी (दशहरा), मानवजाति को असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की शाश्वत विजय का संदेश देती है। यह पर्व हमें प्रेरित करता है कि हम बाहरी बुराइयों के साथ-साथ अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ और ईर्ष्या रूपी रावण का दहन करें तथा सदाचार, संयम और मानवीय मूल्यों को अपनाएँ। बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः जीत सच्चाई और अच्छाई की ही होती है। केवल पुतला जलाने से काम नहीं चलता; मनुष्य को अपने भीतर के विकारों और नकारात्मकता को समाप्त करना चाहिए। भगवान श्रीराम का जीवन हमें धैर्य, कर्तव्यपरायणता और मर्यादा का पालन करना सिखाता है। यह पर्व सकारात्मक ऊर्जा और साहस के साथ जीवन की हर चुनौती का सामना करने का संबल देता है।

जय श्रीराम!

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
2026 अक्तूबर 12 से 20 तक

12-10-2026 **सोमवार** **दिन - तिरुच्चि उत्सव** **रात - महाशेषवाहन**	**13-10-2026** **मंगलवार** **दिन - लघुशेषवाहन** **रात - हंसवाहन**	**14-10-2026** **बुधवार** **दिन - सिंहवाहन** **रात -** **मोतीवितानवाहन**
15-10-2026 **गुरुवार** **दिन - कल्पवृक्षवाहन** **रात - सर्वभूपालवाहन**	**16-10-2026** **शुक्रवार** **दिन - पालकी में आरूढ़** **मोहिनी अवतारोत्सव** **रात - गरुड़वाहन**	**17-10-2026** **शनिवार** **दिन - हनुमन्तवाहन** **सायं - पुष्पक विमान** **रात - गजवाहन**
18-10-2026 **रविवार** **दिन - सूर्यप्रभावाहन** **रात - चंद्रप्रभावाहन**	**19-10-2026** **सोमवार** **दिन - स्वर्ण रथ-यात्रा** **रात - अश्ववाहन**	**20-10-2026** **मंगलवार** **दिन - चक्रस्नान**

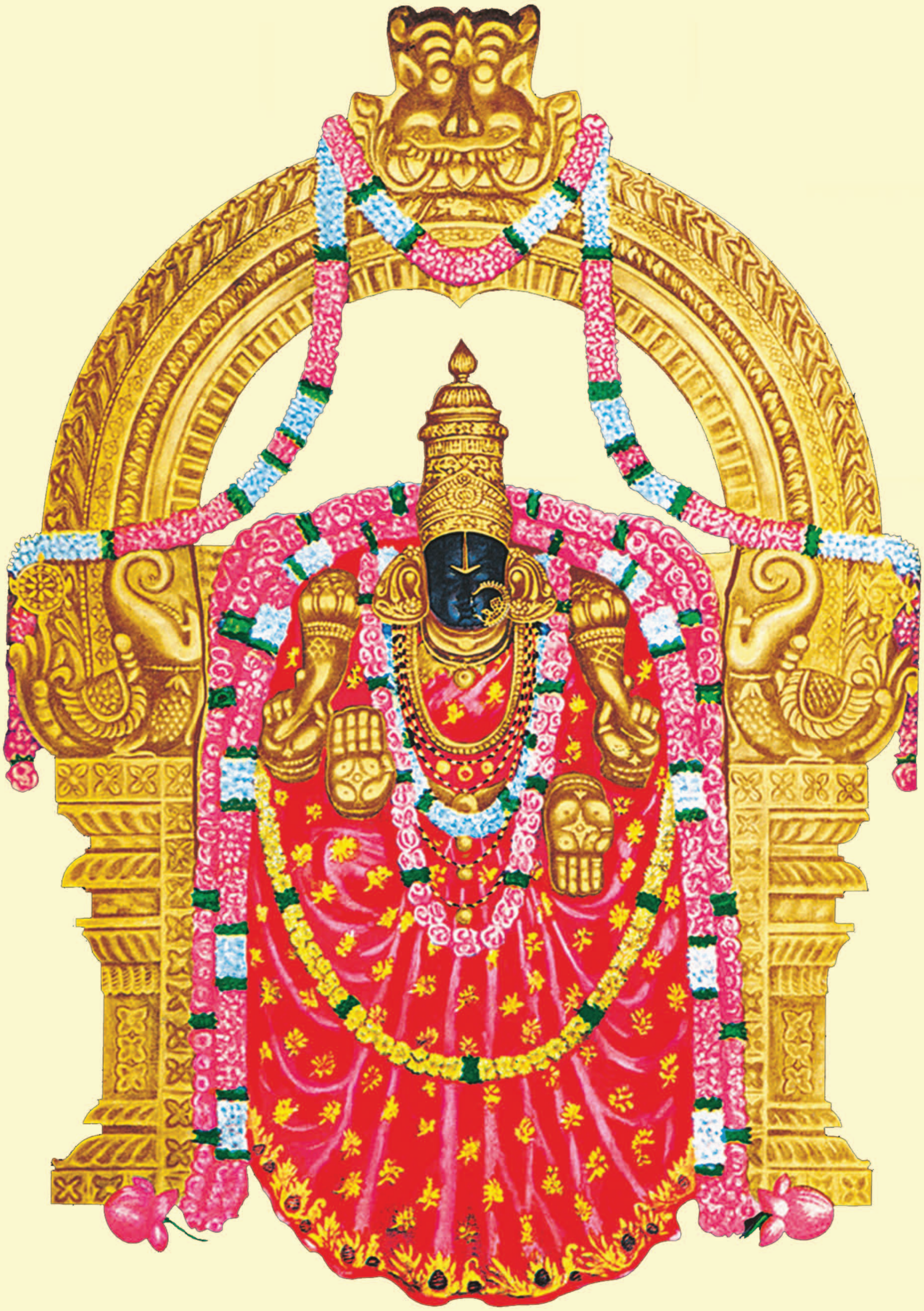

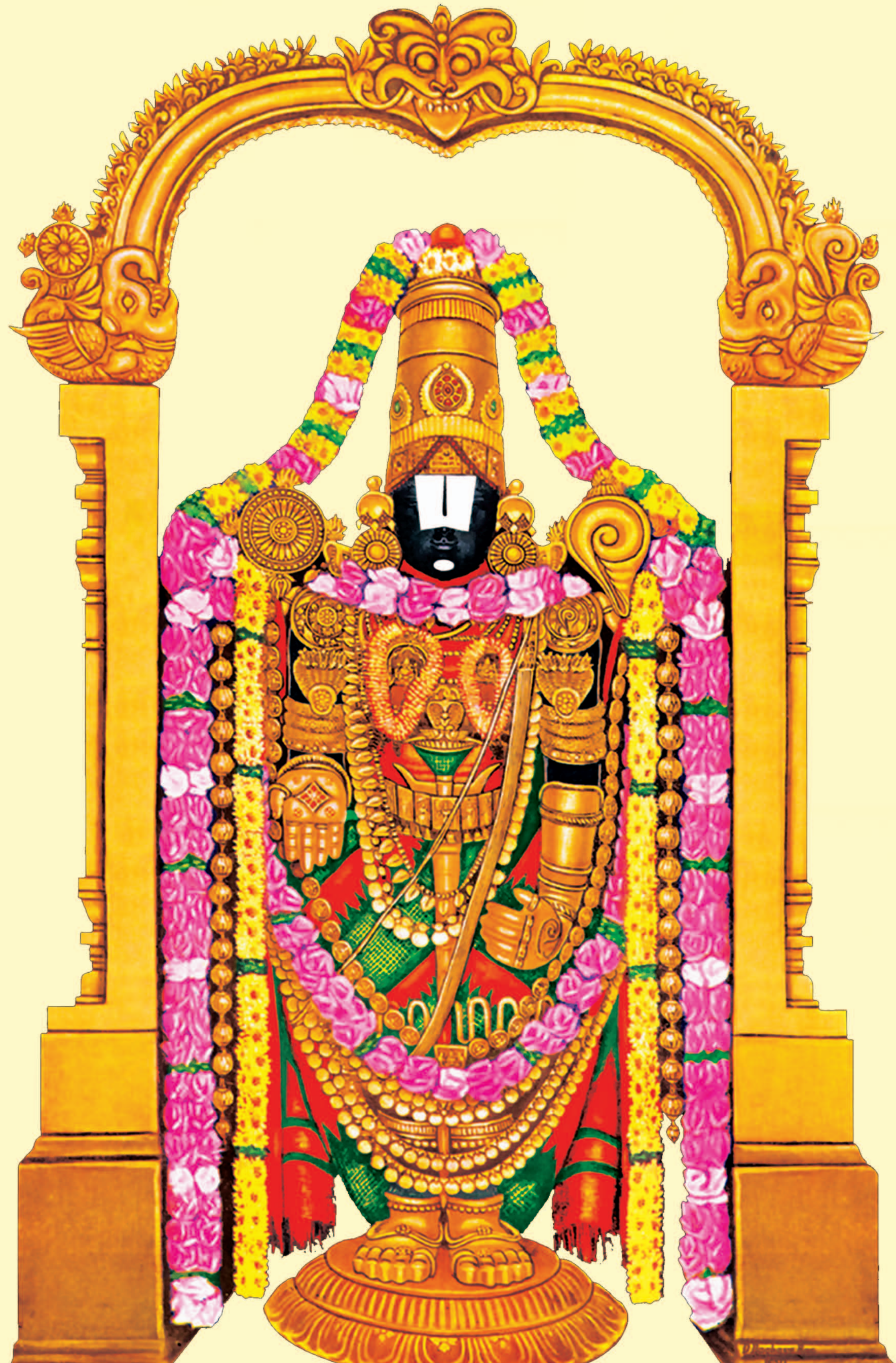

तिरुचानूर

श्री पद्मावती देवी का नवरात्रि उत्सव

2026 अक्तूबर 12 से 20 तक

श्री स्वामिपुष्करिणी

- डॉ.रमेश कृष्णा

तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी के मुख्य मंदिर की उत्तर दिशा में, आदिवराहस्वामी मंदिर से लगी हुई इस विशाल स्वामिपुष्करिणी को न देखनेवाला कोई नहीं होगा। कुछ सालों के पहले तक इस पुष्करिणी में पवित्र स्नान करने के बाद ही श्रीनिवास प्रभुजी के दर्शन केलिए जाते थे। इस पुष्करिणी का विशेष आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और पौराणिक महत्त्व है। देवाधिदेवतागण, ब्रह्मर्षिगण, राजाधिराजगण, भक्ताग्रगण्य इस प्रकार अनेक लोग इस पुष्करिणी के पवित्र जल से पवित्र होकर, श्रीनिवास की कृपा के पात्र बनकर, मोक्ष की प्राप्ति तथा अभीष्ट कामनाओं की सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

तिरुमल क्षेत्र में अनगिनत जलाशय या सरोवर है जो 'कोनेरु' के नाम से जाने जाते हैं जैसे नरसिंह कोनेरु, अच्युतराय कोनेरु, श्री रामानुज पुष्करिणी, मंगलम् बावि आदि। लेकिन तिरुमल में स्थित कोनेरु अथवा पुष्करिणियाँ सभी एक स्तर की हों, तो स्वामिपुष्करिणी अकेली दूसरे स्तर की है। भक्तों का विश्वास है कि तिरुमल के समस्त तीर्थ स्वामिपुष्करिणी से ही उत्पन्न हुए हैं और उसी स्थान से अन्तर्वाहिनियों के रूप में प्रवाहित होकर, तिरुमल की पर्वत-श्रेणियों में अनेक स्थानों पर प्रकट होकर भक्तों का उद्धार करने के बाद पुनः स्वामिपुष्करिणी में ही विलीन हो जाते हैं।

आदिवराह के अवतार में स्थित श्री महाविष्णु की आज्ञा के अनुसार, उनके वाहन गरुड़ ने वैकुण्ठ में क्रीड़ाद्रि के ऊपर स्थित ''क्रीड़ावापि'' नामक जलाशय को क्रीड़ाद्रि के साथ भूलोक में लाकर वेंकटाचल पर स्थापित किया। श्री महाविष्णु द्वारा दिए गए वर के प्रभाव से उसी स्थान पर वह प्रकट होकर स्वामिपुष्करिणी के रूप में अवतरित हुई। श्रीनिवासप्रभु ने अपनी देवियों के साथ इस पुष्करिणी में जलक्रीड़ा करते हुए आनन्द लिया, इसलिए यह गंगा नदी से भी अत्यन्त पवित्र मानी गई। कहा जाता है कि इस पुष्करिणी के केवल दर्शन मात्र से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट होकर समस्त भोग-भाग्य प्राप्त होते हैं।

स्वामिपुष्करिणी का नाम :

इसके सम्बन्ध में मुख्य रूप से दो कथाएँ प्रचलित हैं। तिरुमल क्षेत्र में शोभायमान सभी पुष्करिणियों में प्रमुख, विशाल तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने के कारण इस पुष्करराज को स्वामिपुष्करिणी नाम से पुकारा जाता है। 'स्वामी' का अर्थ प्रभु, अग्रगण्य, अत्यन्त प्रमुख आदि होता है।

दूसरी धारणा के अनुसार, विभिन्न कारणों से स्वामित्व अर्थात् साम्राज्य खो चुके महापुरुष भक्तिपूर्वक इस पुष्करिणी में तीर्थस्नान करके राज्य, धन-सम्पत्ति तथा भोग-भाग्य पुनःप्राप्त कर लेते हैं।

नौ तीर्थों का समागम :

एकजुट और अविभक्त दिखाई देनेवाली स्वामिपुष्करिणी वास्तव में नौ तीर्थों का समागम है। एक-एक दिव्य पुरुष ने अपनी-अपनी शक्तियों को उन-उन तीर्थों में स्थापित करके प्रकट किया। प्रत्येक तीर्थ में स्नान करने से एक-एक विशिष्ट फल प्राप्त होता है।

1. कुबेर तीर्थ अथवा धन तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी की उत्तर दिशा में स्थित कुबेर-स्थान में विराजमान यह तीर्थ धन के अधिपति कुबेर द्वारा निर्मित किया गया था। साक्षात् श्रीनिवास प्रभु को भी ऋण देने योग्य भाग्यशाली है कुबेर। आज भी स्वामी की अपार सम्पत्ति की रक्षा करते हुए महाद्वार के दोनों ओर खड़े रहनेवाले शंखनिधि और पद्मनिधि कुबेर के ही अनुचर हैं। ऐसी मान्यता है कि इस तीर्थ में स्नान करने से समस्त पापों का नाश होने के साथ-साथ समस्त सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं।

इस तीर्थ की उत्तर दिशा में स्थित छोटे से केसरिया रंग के मंडप को 'व्यासराय आह्निक मंडप' कहा जाता है। श्रीकृष्णदेवराय के गुरु व्यासतीर्थ इसी स्थान पर त्रिकाल संध्यावन्दन किया करते थे।

2. गालव तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी के ईशान्य भाग में गालव महर्षि द्वार अपनी सम्पूर्ण तपःशक्ति अर्पित करके यह तीर्थ स्थापित किया गया था। इस प्रकार निर्मित इस तीर्थ के जल में पवित्र स्नान करने से सभी क्लेश दूर होकर सुख-सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। इस तीर्थ की ईशान्यदिशा में विराजमान आंजनेय को 'कोनेटीगट्टु आंजनेयस्वामी' कहा जाता है। आदिवराहस्वामी मंदिर की पूर्वदिशा में स्थित इस छोटे से मंदिर में आंजनेय मुकुलित हाथों से वराहस्वामी को नमस्कार करते हुए दर्शन देते हैं।

3. मार्कण्डेय तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी के पूर्वी भाग में, पूर्व माड़ावीथि से लगे हुए इस तीर्थ को मार्कण्डेय महर्षि ने निर्मित किया था। इस तीर्थ में स्नान करने से अकाल मृत्यु दूर होकर दीर्घायु प्राप्त होती है।

4. अग्नि तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी की दक्षिण दिशा में अग्निदेव द्वारा स्थापित इस तीर्थ में स्नान करने से दीर्घकालीन रोग

नष्ट हो जाते हैं। पद्मावती परिणय के अवसर पर अग्निदेव ने स्वयं भोजन की व्यवस्थाओं की देखरेख की। तिरुमल के समस्त तीर्थों को भोजन पकाने के पात्रों के रूप में उपयोग करते हुए, तीन करोड़ देवताओं के लिए षड्रसोपेत भव्य भोज तैयार करके उन्होंने स्वामी के प्रति अपनी विनम्र भक्ति और कृतज्ञता-भाव प्रकट किया।

5. वरुण तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी की पश्चिम दिशा में स्थित इस तीर्थ में स्नान करने से वरुण की कृपा से जन्म-जन्मान्तर के समस्त पापों का मैल दूर हो जाता है। समय पर वर्षा कराकर स्वामिपुष्करिणी को सदा पवित्र जल से भरा रखने और भक्तों को पवित्र करने में वरुण बहुत सहायता करते हैं।

6. वायु तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी के वायव्य कोण में वायुदेव द्वारा निर्मित इस तीर्थ में स्नान करने से परमपद की प्राप्ति होती है। इसी स्थान पर आदिवराहस्वामी का मंदिर भी है। वायुदेव और आदिशेष के बीच हुए बल-परीक्षण में श्री महाविष्णु ने निगर्वी और निःस्वार्थ भक्त वायुदेव का पक्ष लिया। युगों से अपनी सेवा करनेवाले आदिशेष के अहंकार का भंग करके उन्होंने यह सिद्ध किया कि जो लोग अपने-पराए का भेद न रखते हुए, समर्पण-भाव और विनय के साथ उनकी सेवा करते हैं, वे सभी उनकी कृपा के पात्र हैं।

7. यम तीर्थ : यमधर्मराज ने ऐसा वर दिया कि स्वामिपुष्करिणी की दक्षिण दिशा में स्थित इस तीर्थ में स्नान करनेवालों को नरक-यातना से मुक्ति मिलेगी। यहाँ स्नान करने से वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। श्री वेंकटेश्वर प्रभु की आज्ञा के अनुसार यमराज स्वामी के आयुध चक्रायुध की निगरानी में चलते हुए दुष्टों का दमन करता है और अपने यमपाश से उनके प्राणों का हरण करता है।

8. वशिष्ठ तीर्थ : स्वामिपुष्करिणी के नैऋत्य दिशा में वशिष्ट महर्षि द्वारा निर्मित इस तीर्थ में स्नान करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। वशिष्ठ मुनि की सलाह के अनुसार दशरथ ने स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके पूर्वजन्मों के ऋणानुबन्धों से मुक्ति प्राप्त की। तत्पश्चात् पुत्रकामेष्टि याग करके राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को पुत्रों के रूप में प्राप्त किया। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि त्रेतायुग से ही इस पुष्करिणी का अत्यन्त विशेष महत्व है।

9. सरस्वती तीर्थ : यह स्वामिपुष्करिणी के मध्य भाग में स्थित है। पुराणों में कहा गया है कि साक्षात् सरस्वतीदेवी ही स्वामिपुष्करिणी के रूप में अवतरित हुई हैं। गंगानदी के समान भक्तों के पापों का नाश करने की प्रबल इच्छा रखनेवाली सरस्वती ने अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए नदी के रूप में ही वेंकटाचल पर आकर घोर तपस्या की। उस समय रावण के पितामह पुलस्त्य ब्रह्म वेंकटाचल पर आए तो ध्यान में स्थित सरस्वती देवी उनका उचित सत्कार नहीं कर सकीं। इससे क्रुद्ध होकर पुलस्त्य ने श्राप दिया कि सरस्वती देवी जिस कार्य की सिद्धि के लिए तपस्या कर रही हैं, वह पूर्ण नहीं होगी और सरस्वती नदी कभी भी गंगा नदी के समान नहीं

बन सकेगी। तब सरस्वती ने कहा कि ब्रह्मदेव की पत्नी होने के नाते वे उन्हें पुत्र के समान हैं। मातृमूर्ति को तमोगुण से शाप देकर राक्षस के समान आचरण करने के कारण सरस्वती ने यह प्रति-शाप दिया कि पुलस्त्य का वंश राक्षसों से भर जाएगा और उसका अन्त होगा। तब सरस्वती देवी को विष्णुमूर्ति ने वर प्रदान किया कि जिस स्थान पर सरस्वती देवी ने तपस्या की थी, उसी स्थान पर वह स्वामिपुष्करिणी के रूप में प्रकट होगी और भक्तों को स्वामिपुष्करिणी में स्नान करने के बाद ही श्रीनिवास प्रभु के दर्शन करने चाहिए। तभी तिरुमल-यात्रा का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है।

स्वामिपुष्करिणी की महिमाएँ :

परम पवित्र स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके पूर्वजन्मों के पापों को दूर कर इहलोक और परलोक के सुख प्राप्त करनेवाले अनेक पुराणपुरुष हुए हैं।

1. शंखण चक्रवर्ती : ब्रह्मपुराण की एक कथा के अनुसार एक समय उत्तर भारत में स्थित कंबोज राज्य पर 'शंखण' नामक एक सम्राट शासन करता था। लेकिन शत्रुओं ने उनको पदच्युत कर दिया। तब गुरुजनों और ज्ञानियों के परामर्श से वह वेंकटाचल पहुँचा और परिवार सहित स्वामिपुष्करिणी में भक्तिश्रद्धा से स्नान किया। श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का दर्शन करके जब वापस निकले तभी समाचार पाया कि उनके शत्रु आपस में लड़कर मारे गये और अब जनता उन्हीं को अपना राजा चुन रही है। इसी सम्राट ने तोंडमान सम्राट के बहुत पहले ही तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

2. परीक्षित महाराज : द्वापरयुग में अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित जब श्रृंगि महर्षि के श्राप के कारण सात दिनों में तक्षक नामक सर्पराजा के कारण मरनेवाले थे तब 'काश्यप' नाम से प्रसिद्ध महिमान्वित विप्र, अपनी मन्त्रशक्ति से परीक्षित् महाराज को तक्षक के विष से बचाकर महाराज से बहुत-सी भेंटें प्राप्त करने के उद्देश्य से निकला। ठीक उसी समय तक्षक भी नगर की सीमा तक पहुँचकर काश्यप से मिला। काश्यप के द्वारा उसकी अन्तर्निहित शक्ति को समझकर तक्षक ने उसे ललचाया।

धन के लोभ में पड़े काश्यप ने तक्षक के द्वारा दी गई बहुमूल्य सम्पत्ति को स्वीकार करके अपने स्थान को लौट गया। फलतः उसी दिन सायंकाल तक्षक के दंश के कारण परीक्षित् महाराज की मृत्यु हो गई। इस घटना को एक-दूसरे से सुनकर राज्य के सभी नागरिक उससे घृणा करने लगे और उसे सभ्य समाज से बहिष्कृत कर दिया। तब 'शाक्यमुनि' ने काश्यप के पापनिवारण के लिए स्वामिपुष्करिणी में स्नान करना ही एकमात्र उपाय बताया। वह शीघ्र ही वहाँ से निकलकर तिरुमल क्षेत्र पहुँचा और भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ स्नान किया। तत्पश्चात् श्री वेंकटेश्वर को प्रणाम करके स्वयं पापमुक्त हुआ। तब जनता ने उन्हें फिर से अपना लिया।

3. अंजनादेवी : वराहपुराण में एक और रोचक प्रसंग का उल्लेख किया गया है। रावण द्वारा अपहृत सीता साध्वी को पाने राम और लक्ष्मण वानरसेना सहित शेषाचल पर्वत के पादभाग में पहुँचे। तब हनुमान और उनकी माता अंजनादेवी की सलाह पर श्रीरामचन्द्र ने स्वामिपुष्करिणी में पवित्र स्नान किया। बाद में रावण संहार करके श्रीरामचन्द्र ने भी अपना खोया हुआ स्वामित्व पुनःप्राप्त किया।

4. धर्मगुप्त की कथा : प्राचीनकाल में धर्मगुप्त नामक चन्द्रवंशी राजा उत्तर भारत में राज्य करता था। एक दिन

वह भयंकर जंगली सुअर का शिकार करते हुए आया और एक अजीब परिस्थिति में भालू के वेष में घूम रहे ध्यानकाष्ठ नाम के एक मुनिश्रेष्ठ के श्राप के कारण उन्मत्त होकर भटकने लगा। तब मन्त्रियों ने किसी तरह उसे पहचान लिया और उसे वानप्रस्थ आश्रम में रह रहे उसके पिता नन्द के पास ले गये। वह पुत्र के साथ जैमिनि महर्षि के पास जाकर उसके शाप से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की। उन्होंने शाप का अन्त बतलाते हुए कहा कि वह वेंकटाचल पर जाकर स्वामिपुष्करिणी में स्नान करे और श्रद्धा-भक्ति से श्रीनिवास भगवान की सेवा करे, तभी वह शाप से मुक्त होगा। स्वामिपुष्करिणी की महिमा तथा श्री वेंकटेश्वर के कृपाकटाक्ष से धर्मगुप्त शापमुक्त हो गया। उसने पुनः राज्यभार सँभाला और प्रजा को प्रसन्न रखते हुए राज्य का शासन किया।

इतिहास के पन्नों में स्वामिपुष्करिणी :

15वीं शताब्दी में विजयनगर के चक्रवर्ती सालुव नरसिंहराय द्वारा स्वामिपुष्करिणी के मध्य भाग में निर्मित 'नीराली मंडप' विजयनगर की शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस मंडप को 'वसन्त मंडप' भी कहा जाता था। इसी पुष्करिणी में श्री वेंकटेश्वर स्वामी का 'तेप्पोत्सव' या 'प्लवोत्सव' मनाया जाता है। बाद के समय में ताल्लपाका वंश के लोगों ने पुष्करिणी की सीढ़ियों का पुनरुद्धार कराया और नीराली मंडप की मरम्मत करवाई। पत्थर के दीपस्तम्भ स्थापित करके उन पर दीप जलाने के लिए परिचारकों को नियुक्त किया। मुक्कोटि द्वादशी के दिन विशेष रूप से दीप प्रज्वलित करने की व्यवस्था की गई। पुष्करिणी के तट के दोनों ओर अन्नमाचार्य और उनके पुत्र पेद्द तिरुमलय्या तथा मध्य भाग में श्रीनिवास की शिलाफलकियाँ आज भी देखी जा सकती हैं।

पुष्करिणी के पश्चिम दिशा में जगद्गुरु आदिशंकराचार्य का स्तूप है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि आदिशंकराचार्य शिवकांची से काशी के पुण्यक्षेत्र की यात्रा करते समय मार्ग में तिरुमल आए होंगे। तिरुमल में और तिरुपति नगर में शंकराचार्य के मठ आज भी हैं। 19वीं शताब्दी के मध्य भाग में हाथीरामजी मठ से सम्बन्धित महन्त देवदास ने पुष्करिणी का पुनः जीर्णोद्धार करवाया।

चक्रस्नान :

वराहस्वामी मंदिर से लगे हुए पुष्करिणी के भाग को 'वराहपुष्करिणी' तथा उसके दक्षिण दिशा में स्थित भाग को 'श्रीनिवासपुष्करिणी' कहा जाता है।

प्रत्येक वर्ष चार अवसरों पर वराहपुष्करिणी में श्री वेंकटेश्वर के परिवार-देवता और आयुध चक्रत्ताल्वार का वैभवपूर्ण 'चक्रस्नान' कराया जाता है।

वर्तमान काल में स्वामिपुष्करिणी :

2007वें वर्ष में ति.ति.दे. ने पुष्करहारति की परम्परा प्रारंभ की। ब्रह्मोत्सवों तथा अनेक अन्य उत्सवों में जब मलयप्पस्वामी माड़ावीथियों में शोभायात्रा करते हैं, तब पुष्करिणी की पूर्व दिशा में स्थित पुष्करिणी महाद्वार के पास पुष्करिणी की आरती दी जाती है।

निरन्तर लाखों भक्तों के स्नान करने के कारण पुष्करिणी का जल प्रदूषित होने लगा था। इसलिए हाल के समय में ति.ति.दे. ने वैज्ञानिकों और आगमशास्त्र के विशेषज्ञों से परामर्श करके पुष्करिणी के भीतर स्थित कुछ महत्वपूर्ण स्रोत-कुओं को छोड़कर उसके सम्पूर्ण तल को सीमेंट से कंक्रीट करवाया। सभी दिशाओं में लोहे की जाली लगाकर सुराक्षा-व्यवस्थाओं को सुदृढ़ किया। ति.ति.दे. के निरन्तर प्रयासों के कारण अब पुष्करिणी में स्नान करना अत्यन्त सुविधाजनक और सुरक्षित हो गया है।

1972वें वर्ष में पानी को छानने के लिए फिल्टर-पॉइंट स्थापित किए गए। लगभग 20 लाख गैलन क्षमतावाली इस पुष्करिणी में लाखों भक्त निरन्तर स्नान करते रहने पर भी जल स्वच्छ और बिना किसी प्रकार की कोई के दिखाई देता है।

इस महिमावान पुण्यतीर्थ के बारे में वराहपुराण ऐसा बताता है-

स्वामिपुष्करिणी स्नानं सद्गुरोः पादसेवनम्।
एकादशीव्रतं चापि त्रयमत्यन्त दुर्लभम्।।
दुर्लभं मानुषं जन्म दुर्लभं तत्र जीवनम्।
स्वामि पुष्करिणी स्नानं त्रयमत्यन्त दुर्लभम्।।

अर्थात् स्वामिपुष्करिणी में स्नान, सद्गुरु के चरणों की सेवा और एकादशी व्रत इन तीन सत्कर्मों का मानव-जन्म में प्राप्त होना अत्यन्त दुर्लभ है। इसी प्रकार मानव-जन्म प्राप्त होना, मनुष्य के रूप में जीवन व्यतीत करना और उस मानव-जीवन में स्वामिपुष्करिणी में स्नान करना ये कार्य भी अत्यन्त दुर्लभ हैं, इससे यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि स्वामिपुष्करिणी में पवित्र स्नान करना कितना महान पुण्यकार्य है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए 3 महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

(गतांक से)

महिमान्वित महा मंत्र
'ओम नमो वेंकटेशाय'

- डॉ.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

वेंकटेश मंत्र में ही अन्नमय्या ने विष्णु तत्व को पाया है। श्री महाविष्णु के प्रति भक्ति का उदय होना अपने आप में ही एक भाग्य समझते हैं वे। हरि नाम लेना हरि की कथा सुनना दोनों पुण्य से ही प्राप्त होते हैं। एक और संकीर्तन में विष्णु कथा की महिमा को वे कीर्तन करते हैं। युग युगों से विष्णु कथा जन जन में प्रचलित है। विष्णुकथा को सुनने का मौका भी भाग्य से ही प्राप्त होता है। विष्णु कथा ही भक्तों के लिए व्यवहार-संहिता है। जीवन का मार्गदर्शन भी विष्णु कथा ही करती है। जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान भी विष्णु कथा ही देती है। संपूर्ण वेद-ज्ञान भी विष्णु कथा ही है। विष्णु कथा ही वेद है। संद्यादि नियमों का पालन करना भी विष्णु कथा का अनुसरण करना है। भक्तों के जीवन के साथ विष्णु कथा ऐसा जुल मिल गयी है कि उन का जीवन ही विष्णु कथा सुनने के लिए बना है। इतनी महिमा वाली विष्णु कथा सुनने का सौभाग्य कई जन्मों के पुण्य से ही प्राप्त होता है। विष्णु कथा मानव के जीवन को नियंत्रित करती है। मानव जीवन ही विष्णु कथा है। वृंदावन के ग्वालों का जीवन भी विष्णु कथा है। ग्वालों में ग्वाला बन कर श्रीकृष्ण ने ग्वालों को परमपद का उपदेश दिया था। ग्वालों की मथनी में भी विष्णु कथा है। अन्नमय्या का विचार है कि विष्णु कथा जन जन के जीवन में समा गयी है। भक्तों के जीवन से उसे अलग देख नहीं सकते हैं। इसी आशय के अन्नमय्या का एक संकीर्तन बहुत प्रचलित है...

विनरो भाग्यमु विष्णु कथा
वेनुबल मिदिवो विष्णु कथा।। *।।विनरो।।*

आदि नुंडि संद्यादि विधुलल्लो
वेदंबयिनदि विष्णु कथा

नादिंचीनिदि नारदादुलचे
वीथी वीथुलने विष्णु कथा।। *।।विनरो।।*

वदलक वेद व्यासुलु नुडिविन
विदित पावनमु विष्णु कथा
सदनंबैनदि संकीर्तनयै
वेदकिन चोटने विष्णु कथा।। *।।विनरो।।*

गोल्लेतलु चल्लु गोनकोनि चिलुकग
वेल्लि विरियाये विष्णु कथा
इल्लिदे श्री वेंकटेश्वर नाममु
वेल्लि गोलिपे नी विष्णु कथा।। *।।विनरो।।*

हे भक्त जनों! यह जानो कि विष्णु कथा को सुनना भी भाग्य से ही होता है। विष्णु कथा अपने आप में अतुलनीय बल देती है। आदिकाल से ही संध्यादि जो नियम बनाये गए जो वेदों की तरह आचरणीय और अपरिवर्तनीय है, वह भी विष्णु कथा के कारण ही है। विष्णु कथा ही आचार-नियमों का मूलाधार है। विष्णु कथा ही वेदों और तद्वारा जीवन के ज्ञान का सार है। आरंभ से ही नारदादि मुनियों के द्वारा गली-गली, गाँव-गाँव में विष्णु कथा का प्रचार किया गया। वेदव्यास ने भी इसी विष्णु कथा को ग्रहण किया है। उन्होंने वेदों को विष्णु कथा से अलग किए बगैर सारे ब्रह्मांड में विष्णु कथा को ही अति पावन बताया है। विष्णु कथा की तरह वेद भी अति पवित्र हैं। वे ही वेद संकीर्तन के माध्यम से विष्णु कथा को ही वर्णन कर रहे हैं। विष्णु कथा रूपी वेद ही संकीर्तन बने हैं। हे भक्त जनों इस सत्य को आप को जानना होगा। ब्रजवासी गोप स्त्रियों के मथनी चलाने में भी विष्णु कथा है। उन की मथनी से ही विष्णु कथा पूरे प्रदेश में फैल गयी है। उसी प्रकार विष्णु कथा से ही जुडे श्री वेंकटेश्वर के नाम को विष्णु कथा ही प्रकाश में लाती है। श्री वेंकटेश्वर का नाम और विष्णु कथा अलग नहीं है। विष्णु कथा ही श्री वेंकटेश्वर का नाम है और श्री वेंकटेश्वर का नाम ही विष्णु कथा है। इस रूप में अन्नमय्या ने श्री वेंकटेश्वर के नाम मंत्र को विष्णु कथा के श्रवण से जोड कर उस की महिमा का कीर्तन किया है। यह बताया है कि 'ओम नमो वेंकटेशाय' नाम मंत्र में ही संपूर्ण विष्णु कथा छिपी हुई है।

श्री वेंकटेश्वर का परब्रह्म और सर्वांतर्यामी रूप :

अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों के माध्यम से श्री महाविष्णु के अवतारी श्री वेंकटेश्वर को सर्वांतर्यामी सभी रूपों में देखा है, पाया है, जाना और माना है। अगर विश्व में कोई ईश्वर है तो वह श्री वेंकटेश्वर है। ईश्वर के इतने सारे रूपों को भक्तों ने पहचाना और जाना है वे सारे रूप भी श्री वेंकटेश्वर के ही है। यह अन्नमय्या की भक्ति साधना का चरमोत्कर्ष है। सारे देवताओं में तथा सारे ब्रह्मांड में सारे रूपों में श्री वेंकटेश्वर को ही देखना अन्नमय्या का अद्भुत अनुभव है। ऐसा अनुभव सिर्फ आत्म-ज्ञान रखनेवाले भक्त को ही होता है। अन्नमय्या एक उच्च स्तरीय आत्म-ज्ञान भक्त है। उन का विचार है कि सृष्टि के पीछे लयकार एक ही है उसे लोग अलग अलग ही पहचानते हैं। किंतु है वह एक ही है। उसे कोई शिव समझता है तो कोई केशव। अन्नमय्या एक आध्यात्मिक संकीर्तन इस सत्य का उद्घाटन करता है। अन्नमय्या का विचार है कि वह ईश्वर वेंकटेश्वर है। वह भक्त उसे जिस रूप में देखता है उस रूप में दिखाई पडता है। प्रकारांतर से वह ईश्वर एक ही है। वह श्री वेंकटेश्वर है। अन्नमय्या ने इस संकीर्तन में यही विचार प्रकट किया है। अन्नमय्या का यह अद्भुत अनुभव है कि ईश्वर एक है। वह निराकार, साकार और अनेक रूप में जाने जाते हैं। माने जाते हैं। यह वेंकटेश्वर का वैशिष्ट्य है कि जिस नाम से पुकारो या जिस नाम से उसे जाने वे उसी रूप में दर्शन देते हैं। सारे रूप उन के हैं और वे एक ही सारे रूपों में दर्शन देते हैं। अन्नमय्या में कोई

भ्रम या द्विविधा नहीं है वे सिर्फ श्री वेंकटेश्वर को ही परब्रह्म मानते हैं। दूसरों के भ्रम के बारे में वे श्री वेंकटेश्वर को ही बता देते हैं। लोग आप को तरह तरह के रूपों से जानते हैं। उन्हीं नामों से आप का संबोधन करते हैं। यह उन की ज्ञानहीनता का भ्रम है। फिर आप ही ऐसे हैं कि आप को कोई भी किसी नाम से पुकारे आप को कोई आपत्ति नहीं है। उन को आप उसी रूप में दर्शन देते हैं। निराकार, एकेश्वर, सर्वरूपी, सर्वांतर्यामी श्री वेंकटेश्वर का यह ज्ञान अन्नमय्या को भक्तों में श्रेष्ठ सिद्ध करता है। निम्न संकीर्तन ही इस का साक्ष्य प्रमाण है...

एंत मात्रमुन एव्वरु दलचिन अंत मात्रमे नीवु
अंतरांतरमु लेचि चूड पिंडंते निप्पटि यन्नट्लु।। ।।एंत।।

कोलुतुरु मिमु वैष्णवुलु कूरिमितो विष्णुडनि
पलुकुदुरु मिमु वेदांतुलु परब्रह्मंबमनुचु
तलतुरु मिमु शैवुलु तगिन भक्तुलनु शिवुडनुचु
आलरि पोगडुदुरु कापालिकु लादि भैरवुंडनुचु।। ।।एंत।।

सरि नेन्नुदुरु शाक्तेयुलु शक्ति रूप नीवनुचु
दरिशनमुलु मिमु नाना विधुलनु तलपुल कोलदुल भजिंतुरु
सिरुल मिमुने याल्पबुद्धि दलचिन वारिकि अल्पंबवुडवु
गरिमल मिमु ने घनमनि दलचिन घन बुद्धुलकु घनुडवु।। ।।एंत।।

नीवलन कोरते लेदु मरि नीरु कोलदि तामेरवु
आवल भागीरधि दरि वावुल आ जलमे ऊरिनयट्लु
श्री वेंकटपति नीवैते ममु चेकोनि वुन्न दैवमनि
ईवलने नी शरणुननेदनु इदिये परतत्वमु नाकु।। ।।एंत।।।

वैष्णव संप्रदाय में शरणागति को अधिक महत्व दिया गया है। भक्त अपने को मिटाकर यानी मैं तत्व से हट कर सब कुछ परमात्मा को ही मानता है। उन्हीं के

अस्तित्व को स्वीकार करता है। उन की शरण में जाकर आत्म समर्पण करता है। तब भगवान उस का उद्धार करता है। उपर्युक्त संकीर्तन में वैष्णव संप्रदाय की शरणागति के महाविश्वास की अवस्था का अद्भुत चित्रण हुआ है। ईश्वर के भक्तों में भ्रम है। ईश्वर को वे अनेक रूपों में पाकर अनेक नामों से संबंध जोडने की कोशिश करते हैं। किंतु स्वामी एक ही है। अन्नमय्या ने अपने स्वामी की इस सच्चाई को स्वामी से कहते हुए श्री वेंकटेश्वर के परब्रह्म-तत्व का उल्लेख इस संकीर्तन में किया है।

संकीर्तन का भावार्थ यह है- हे स्वामी! जो कोई जिस किसी रूप में आप के बारे में सोचते हैं उसी रूप में आप उन को लगने लगते हैं। ईश्वर के भिन्न-भिन्न पद्धतियों एवं मार्गों को बतानेवाले शास्त्र, उपासना की भिन्न पद्धतियों को बतानेवाले धर्म, उपासना से प्राप्त होनेवाली फलश्रुतियों के परिशीलन से लगता है कि जितना आटा होता है उतनी ही मीठी रोटी बनती है। रोटी आटे पर ही निर्भर होती है। आप में तो कोई अंतर नहीं है। आप वही एक है सब को भाते हैं।

वैष्णव जन प्रेम से तुम को विष्णु नाम से पुकार कर सेवा करते हैं। वेदांती तुम को परब्रह्म बताते हैं। शैव

जन अपनी अपनी पद्धतियों से तुम को शिव भगवान मानते हैं। और तो और कापालिक तुम को आदिभैरव ठहराकर तुम्हारा कीर्तन करते हैं। शाक्तेय लोग तो, तुम को शक्ति स्वरूप के रूप में सिद्ध करते हैं। इस रूप में विविध उपासना पद्धतियों के अनुयायी अपने-अपने सिद्धांतों एवं भावों के अनुसार आप के दर्शन करते हैं। पूजा वंदना करते हैं। अपने-अपने विचारों के अनुसार तुम को पूजते रहते हैं। संपदाओं के स्वामी तुम को अल्पबुद्धि वाला कोई तुम को अल्प समझेगा तो, उसे तुम अल्प ही लगते हो, अत्यधिक महिमावान को अगर कोई महामहीम समझेगा तो, तुम उसे अत्यंत महिमावान लगते हो। तुम में किसी भी प्रकार का लोप या दोष नहीं है। तुम जितना जल है उतना जलजा हो। यानी उन की भक्ति के अनुसार ही उन्हें फल देते हो। गंगा नदी के तट पर रहनेवाले कुओं में गंगा जल के रिसने की तरह पहले बतायी गयी विविध पद्धतियों से तुम्हारी पूजा करनेवालों को उन के हृदयों में उन के भावों के अनुसार ही तुम बसते हो। हे श्री वेंकटेश्वर! हमारी रक्षा करनेवाले रक्षक भगवान तुम ही हो, ऐसा तुम पर विश्वास करके मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। यही मेरे लिए परम प्राप्य परम तत्व है। परमात्मा तत्व है। हे स्वामी! मुझे शरण दो। अपने चरणों में स्थान दो। आत्मज्ञानी अन्नमय्या ने इस रूप में श्री वेंकटेश्वर को परब्रह्म के रूप में मानते हुए अपनी भक्ति-भावना को अत्युत्तम बनाया है।

उन्होंने सभी धर्मों के प्रति समदृष्टि और समन्वय मार्ग को प्रशस्त किया है। धर्म से संबंधित सभी मार्ग अंततः उस एक ईश्वर तक ही पहुँचते हैं। वह ईश्वर एक ही है। जैसी उपासना की पद्धतियों के अनुसार सिर्फ मार्ग तो अलग-अलग हैं अंतिम लक्ष्य तो ईश्वर को प्राप्त करना है। वह तो एक ही है।

वेदों और उपनिषदों में स्पष्ट कहा गया है कि 'एक मेवाद्वितीयम ब्रह्म' यानी परब्रह्म एक ही है। विविध धर्मों को माननेवाले सभी अनेक भिन्न-भिन्न उपासना पद्धतियों के द्वारा उस ब्रह्म पदार्थ तक पहुँचने की कोशिश में ही लगे रहते हैं। किसी भी मार्ग क्यों नहीं यात्रा करे आखिर पहुँचनेवाला लक्ष्य-स्थान एक ही है। वह परमात्मा को प्राप्त करना। वह तो एक ही है। जैसे 'नदी नामसागरो गतिः' यानी सारी नदियाँ भिन्न-भिन्न गति से भिन्न-भिन्न दिशाओं में बह कर अंततः सागर में जाकर संगम होती हैं। सागर में संगम होने के लिए ही बहती है। उसी रूप में सारे धर्मों का लक्ष्य सिर्फ परमात्मा के साथ मिलना ही है। परब्रह्म अकेले ही सत्य है।

सारे उपासक एक ही मार्ग में चलना भी असंभव ही है। उपासना की पद्धतियाँ भी एक जैसी नहीं हो सकती है। 'भिन्न रुचिर्ही लोकः' अर्योक्ति है। लोक में सदा भिन्न रुचिवाले होते हैं। अपनी-अपनी अभिरुचियों के अनुकूल ही लोग व्यवहार करते हैं। सभी एक जैसी अभिरुचि नहीं रखते हैं। इसलिए दूसरे धर्म के लोग अपने-अपने मार्गों पर ही चलते हैं।

''जो कोई जिस रूप में मुझे प्रसन्न करते हैं। उन्हें उसी रूप में अनुग्रह करता हूँ। सारे मनुष्य अपने-अपने मार्ग से ही सही मेरे मार्ग पर चल रहे हैं।'' इस रूप में साक्षात कृष्ण भगवान ने गीता के माध्यम से कहा है।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

भगवद्गीता के इसी श्लोक के अनुरूप ही यह संकीर्तन रचा गया है। इस परमार्थ को ही इस संकीर्तन में पा सकते हैं। वैष्णव जन, वेदांती, शैव, कापालिक, शाक्तेय आदि सभी विविध पद्धतियों का आश्रय लेकर अनेक भावों से प्रकारों से ईश्वर की आराधना कर रहे हैं। अनेक नामों से ईश्वर को पुकार रहे हैं। स्थूल दृष्टि से उन में परस्पर भेद या अंतर दिखाई पडने पर भी सूक्ष्म

दृष्टि से देखने पर वे सभी एक ही ईश्वर की ओर पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। शिव, ब्रह्म, विष्णु, आकाश, शून्य, अर्थ, काल, प्रकृति, पुंभाव, विभाव आदि सभी नाना रूपों में या भेदों में व्यवहार में होने पर भी सभी रूप उस परब्रह्म के रूप ही हैं। योग वासिष्ट में इसी परमतत्व का उद्घाटन किया गया है।

कैश्चित्सा शिव इत्युक्ता कैश्चि ब्रह्मे मात्युदाहृता।

कैश्चि विष्णु रीति प्रोक्ता कैश्चि शून्यमिति स्मृता।।

उस परमात्मा को शैव लोग शिव के रूप में, वेदांती लोग ब्रह्म के रूप में, बौद्ध लोग बुद्ध के रूप में, नैयायिक लोग जगतकर्त्ता के रूप में, जैन लोग अर्हत के रूप में, मीमांसक उसे कर्म के रूप में, ये सभी त्रयलोक्याधीश हरि के ही नाम या रूप हैं। इससे अलग वेद त्रय, सांख्यम, योग, पाशुपतमु, वैष्णवमु आदि सभी में अनेक प्रकारों एवं पद्धतियों का उल्लेख है। यह अच्छा है, यह श्रेष्ठ है कहते आये हैं किंतु नाना मार्गों से सागर में विलीन होनेवाले जल की तरह ईश्वर एक ही है। इन सभी मार्गों में पद्धतियों परमात्मा का ही कीर्तन वह तो एक ही है। इस रूप में यह संकीर्तन अन्नमय्या के समय में स्थित विभिन्न धर्मों के बारे में अन्नमय्या के समन्वय विचार को स्पष्ट करता है। यह अन्नमय्या की धार्मिक समन्वय दृष्टि का श्रेष्ठ उदाहरण भी है। अन्नमय्या सारे धर्मों में तथा सारी जातियों में भेद को स्वीकार नहीं करते हैं। अन्यत्र भी अन्नमय्या ने 'ब्रह्ममोक्कटे पर ब्रह्ममोक्कटे' आदि कीर्तनों में तथा 'भव कमल भव माधव रूप' संकीर्तन में ईश्वर एक ही है, ऐसी घोषणा की है। 'ओम नमो वेंकटेशाय' नाम जप का समन्वय अन्नमय्या का श्रेष्ठ एवं अद्भुत विचार है जो मानवता के हित में है। माधव को भी यही भाता है। 'ओम नमो वेंकटेशाय' महा मंत्र में अन्नमय्या ने पूरे परब्रह्म तत्व को गोलकर रख दिया है। आज घर-घर और गली-गली में 'ओम नमो वेंकटेशाय' मंत्र गूंजता है तो इस के पीछे अन्नमय्या की अनन्य भक्ति साधना ही छिपी हुई है। 'ओम नमो वेंकटेशाय' स्मरण-उच्चारण करने मात्र से उस महा मंत्र का प्रभाव आरंभ हो जाता है। भक्तों जनों के भय को, कष्टों को दूर करनेवाले श्री वेंकटेश्वर के वरद हस्त और आर्त लोगों को आपदाओं से मुक्त करनेवाला कटि हस्त रूपी श्री वेंकटेश्वर की दिव्य मूर्ति नेत्रों के सामने आ जाती है।

भक्त जनों को अभय प्राप्त होता है। 'ओम नमो वेंकटेशाय' मंत्रोच्चारण से भक्त जनों के आस-पास ऐसा कंपन होता है कि उन के साथ श्री वेंकटेश्वर स्वामी का वरद हस्त है। वे अपने भक्तों को अभय प्रदान कर रहे हैं। यह दिव्यानुभूति अनुपम एवं अवर्णित है। नेत्र बंद करके इस मंत्र का जप करने से मन निर्मल हो जाता है। नित्य तनावग्रस्त मानव-जीवन को शांति और उल्लास प्राप्त होता है। कलियुग भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी की कृपा सिर्फ 'ओम नमो वेंकटेशाय' नाम जप से प्राप्त होना, कलियुग के भक्तों के लिए यह परम भाग्य श्री वेंकटेश्वर स्वामी की अपार कृपा है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी विरल है।

'ओम नमो वेंकटेशाय'

समाप्त

(गतांक से)

श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति : वैदिक ज्ञान-परम्परा का आधुनिक विश्वविद्यालय

- श्री सत्यम्, श्री अवधेश कुमार शर्मा

शोध एवं प्रकाशन

'श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय' की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक वैदिक एवं भारतीय ज्ञान-परम्परा के क्षेत्र में उच्चस्तरीय अनुसंधान को प्रोत्साहित करना तथा उसके निष्कर्षों का प्रकाशन करना है। विश्वविद्यालय का मानना है कि वेद, वेदांग, आगम, धर्मशास्त्र तथा संस्कृत वांग्मय में निहित ज्ञान को केवल संरक्षित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे समकालीन शोध-पद्धति के माध्यम से पुनर्व्याख्यायित कर समाज एवं विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य से विश्वविद्यालय में अनुसंधान एवं प्रकाशन को एक स्वतंत्र एवं महत्वपूर्ण शैक्षणिक गतिविधि के रूप में विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय में शोधकार्य मुख्यतः वेद, वेदांग, वेदभाष्य, आगमशास्त्र, धर्मशास्त्र, पुराण, उपनिषद्, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन तथा भारतीय ज्ञान-परम्पर (IKS) में सम्बन्धित विषयों पर केन्द्रित है। शोधार्थियों को पारम्परिक पांडित्य और आधुनिक अनुसंधान-पद्धति का समन्वय करते हुए मौलिक शोध करने के लिए प्रेरित किया जाता है। विशेष रूप से पाठालोचन, पाण्डुलिपि विज्ञान, अनुवाद, समालोचनात्मक सम्पादन तथा तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया जाता है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग द्वारा अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किए गए हैं। इनमें वैदिक साहित्य, वेदभाष्य, आगम, संस्कृत ग्रन्थ, भारतीय ज्ञान-परम्परा, दुर्लभ पाण्डुलिपियों के सम्पादित संस्करण तथा शोधग्रन्थ सम्मिलित हैं। विश्वविद्यालय का अपना प्रकाशन प्रभाग भी है, जिसके माध्यम से विद्वानों और शोधार्थियों की कृतियाँ प्रकाशित की जाती हैं। विश्वविद्यालय ने प्रकाशित पुस्तकों की सूची भी उपलब्ध कराई है, जिससे शोधार्थियों को प्रामाणिक सामग्री प्राप्त होती है।

विश्वविद्यालय "Shevadhih" (शेवधिः) नामक शोध-पत्रिका (ISSN: 2229-4031) का प्रकाशन भी करता है। यह द्विवार्षिक (Bi-annual) शोध-पत्रिका है, जिसमें वेद, वेदांग, वेदभाष्य, आगम, धर्मशास्त्र, पुराण, श्रौत एवं स्मार्त परम्परा तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा से सम्बन्धित मौलिक शोध-लेख प्रकाशित किए जाते हैं। प्राप्त शोध-पत्रों का विशेषज्ञों द्वारा Blind Peer Review किया जाता है, जिससे शोध की गुणवत्ता एवं प्रामाणिकता सुनिश्चित होती है। विश्वविद्यालय लेखकों से प्रकाशन शुल्क भी नहीं लेता, जो इसकी एक उल्लेखनीय विशेषता है।

शोध एवं प्रकाशन की एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि विश्वविद्यालय की पाण्डुलिपि संरक्षण एवं डिजिटलीकरण परियोजना है। इस परियोजना के अंतर्गत ताड़पत्र एवं कागज़ पर लिखित अनेक दुर्लभ संस्कृत पाण्डुलिपियों का संग्रह, संरक्षण, डिजिटलीकरण तथा ऑनलाइन सूचीकरण किया गया है। इस पहल से देश-विदेश के शोधकर्ताओं को इन अमूल्य स्तोत्रों तक पहुँच उपलब्ध हुई है और वैदिक साहित्य के संरक्षण को नई दिशा मिली है।

विश्वविद्यालय समय-समय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, व्याख्यानमालाओं, कार्यशालाओं तथा शोध-

सम्मेलनों का आयोजन भी करता है। इन आयोजनों के माध्यम से विद्वानों, आचार्यों एवं शोधार्थियों के बीच शास्त्रीय संवाद को प्रोत्साहन मिलता है तथा नवीन शोध-दृष्टियों का विकास होता है। इन कार्यक्रमों के शोध-पत्रों को भी संकलित कर प्रकाशित किया जाता है, जिससे वैदिक अध्ययन का साहित्य निरन्तर समृद्ध होता है।

इस प्रकार, श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय का शोध एवं प्रकाशन कार्य केवल अकादमिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता, बल्कि भारतीय वैदिक परम्परा, संस्कृत वांग्मय तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, पुनर्पाठ और वैश्विक प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी है। विश्वविद्यालय की यह भूमिका उसे भारत के प्रमुख वैदिक अनुसंधान केन्द्रों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

पाण्डुलिपि संरक्षण

पाण्डुलिपियाँ किसी भी सभ्यता की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक धरोहर होती हैं। भारत की वैदिक, दार्शनिक, आगमिक तथा संस्कृत परम्परा का विशाल ज्ञान-भण्डार आज भी ताड़पत्र तथा हस्तलिखित कागज़ी पाण्डुलिपियों के रूप में विभिन्न मन्दिरों, मठों, पुस्तकालयों एवं निजी संग्रहों में सुरक्षित है। इन पाण्डुलिपियों में वेद, वेदांग, उपनिषद्, आगम, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, संगीत, नाट्यशास्त्र तथा अनेक प्राचीन विषयों

से सम्बन्धित अमूल्य ज्ञान निहित है। समय, जलवायु, कीटों तथा अनुचित संरक्षण के कारण इन पाण्डुलिपियों के नष्ट होने का खतरा बना रहता है। इसलिए इनका वैज्ञानिक संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना से ही पाण्डुलिपि संरक्षण को अपनी प्रमुख शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों में सम्मिलित किया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल पाण्डुलिपियों का संग्रह करना नहीं, बल्कि उनका संरक्षण, वर्गीकरण, सूचीकरण, डिजिटलीकरण, समालोचनात्मक सम्पादन तथा प्रकाशन करना भी है, जिससे उनमें निहित ज्ञान भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके। विश्वविद्यालय ने इस दिशा में अनेक परियोजनाएँ प्रारम्भ की हैं, जिनके माध्यम से ताड़पत्र एवं हस्तलिखित संस्कृत पाण्डुलिपियों का डिजिटल अभिलेख तैयार किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय की पाण्डुलिपि संरक्षण प्रक्रिया सामान्यतः निम्न चरणों में सम्पन्न होती है -

- पाण्डुलिपियों का संग्रह : विभिन्न मन्दिरों, मठों, विद्वानों एवं निजी संग्रहों से पाण्डुलिपियों का संकलन।
- सूचीकरण : प्रत्येक पाण्डुलिपि का शीर्षक, विषय, लिपि, भाषा, लेखक, अनुमानित काल तथा भौतिक स्थिति का विवरण तैयार करना।
- संरक्षण : क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों की वैज्ञानिक विधियों से सफाई, मरम्मत तथा सुरक्षित भण्डारण।
- डिजिटलीकरण : उच्च गुणवत्ता वाले डिजिटल चित्र तैयार कर उन्हें इलेक्ट्रॉनिक रूप में सुरक्षित करना।
- पाठालोचन एवं सम्पादन : विभिन्न प्रतियों की तुलना कर प्रमाणिक पाठ तैयार करना।

- प्रकाशन : सम्पादित ग्रन्थों का मुद्रित एवं डिजिटल रूप में प्रकाशन, जिससे शोधकर्ताओं को प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध हो सके।

विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पाठालोचन के क्षेत्र में भी प्रशिक्षण प्रदान करता है। इससे शोधार्थी प्राचीन लिपियों को पढ़ने, पाठभेदों का विश्लेषण करने तथा समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने में दक्ष बनते हैं। यह कार्य संस्कृत एवं वैदिक अध्ययन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

पाण्डुलिपि संरक्षण के माध्यम से विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान-परम्परा की अमूल्य धरोहर को न केवल सुरक्षित रख रहा है, बल्कि उसे आधुनिक शोध एवं वैश्विक अकादमिक समुदाय के लिए भी सुलभ बना रहा है। इस प्रकार यह कार्य वैदिक संस्कृति, संस्कृत वांग्मय तथा भारतीय बौद्धिक परम्परा के संरक्षण की दिशा में विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण योगदान है।

पुस्तकालय

किसी भी विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं अनुसंधानात्मक गतिविधियों का प्रमुख आधार उसका पुस्तकालय होता है। श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय का पुस्तकालय वैदिक साहित्य, संस्कृत वांग्मय तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के अध्ययन और अनुसंधान का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों तथा विद्वानों को प्रामाणिक एवं

अद्यतन अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना है, जिससे शिक्षण एवं अनुसंधान की गुणवत्ता में निरन्तर वृद्धि हो सके।

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में वेद, वेदांग, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, आगम, धर्मशास्त्र, दर्शन, पुराण, संस्कृत व्याकरण, काव्य, अलंकारशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, योग, वास्तुशास्त्र तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा से सम्बन्धित विविध ग्रन्थों का समृद्ध संग्रह उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध-पत्रिकाएँ, संदर्भ-ग्रन्थ, शोध-प्रबन्ध (थीसिस), दुर्लभ प्रकाशन तथा अन्य अकादमिक सामग्री भी पुस्तकालय का महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य केवल पुस्तकों का संग्रह करना नहीं, बल्कि ज्ञान के प्रभावी उपयोग को प्रोत्साहित करना है। इस उद्देश्य से विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को संदर्भ सेवा, ग्रन्थ उधार सेवा, शोध-सहायता, ग्रन्थ-सूची निर्माण तथा नवीन प्रकाशनों की जानकारी जैसी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय में डिजिटल संसाधनों के विकास पर भी विशेष बल दिया गया है। ई-पुस्तकों, ई-जर्नलों, ऑनलाइन डेटाबेस तथा डिजिटल पाण्डुलिपियों तक पहुँच उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे शोधार्थियों को वैश्विक स्तर की शैक्षणिक सामग्री सुलभ हो सके। पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री का सूचीकरण एवं प्रबन्धन आधुनिक पुस्तकालय विज्ञान की मान्य प्रणालियों के अनुसार किया जाता है।

पाण्डुलिपि संरक्षण की दृष्टि से भी पुस्तकालय की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय में संरक्षित ताड़पत्र एवं हस्तलिखित संस्कृत पाण्डुलिपियों का वैज्ञानिक संरक्षण, डिजिटलीकरण तथा समालोचनात्मक सम्पादन किया जाता है। इससे प्राचीन भारतीय ज्ञान-संपदा का संरक्षण होता है तथा शोधार्थियों को मूल स्रोतों के अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है।

विश्वविद्यालय का पुस्तकालय समय-समय पर पुस्तक प्रदर्शनियाँ, शोधाभिमुखी कार्यशालाएँ, व्याख्यानमालाएँ तथा अध्ययन-अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों में अध्ययन एवं अनुसंधान की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार पुस्तकालय केवल पुस्तकों का भण्डार न होकर एक सक्रिय शैक्षणिक एवं बौद्धिक केन्द्र के रूप में कार्य करता है।

अतः कहा जा सकता है कि श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय का पुस्तकालय वैदिक एवं संस्कृत अध्ययन की समृद्ध परम्परा को आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी से जोड़ते हुए ज्ञान के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह विश्वविद्यालय के शिक्षण, अनुसंधान तथा प्रकाशन कार्यों का एक सुदृढ़ आधार है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान (TTD) की भूमिका

श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना, संरक्षण एवं विकास में तिरुमल तिरुपति देवस्थान (TTD) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय का प्रायोजन (Sponsorship) TTD द्वारा किया जाता है तथा यह वैदिक शिक्षा, अनुसंधान एवं भारतीय ज्ञान-परम्परा के संवर्धन में निरंतर सहयोग प्रदान करता है।

TTD की प्रमुख भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं -

- विश्वविद्यालय को संस्थागत एवं वित्तीय सहयोग प्रदान करना।
- वेद, वेदांग, आगम एवं संस्कृत शिक्षा के संरक्षण एवं संवर्धन को प्रोत्साहित करना।

- वेदपाठशालाओं के विकास एवं उनके शैक्षणिक समन्वय में सहयोग देना।
- वैदिक अनुसंधान, ग्रन्थ-प्रकाशन एवं पाण्डुलिपि संरक्षण को बढ़ावा देना।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु संगोष्ठियों, सम्मेलनों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन एवं सहयोग करना।
- भारतीय ज्ञान-परम्परा के संरक्षण के लिए विश्वविद्यालय को आवश्यक शैक्षणिक वातावरण एवं संसाधन उपलब्ध कराना।

इस प्रकार, TTD केवल विश्वविद्यालय का प्रायोजक ही नहीं, बल्कि उसके शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं अनुसंधानात्मक विकास का प्रमुख सहयोगी एवं संरक्षण भी है।

राष्ट्रीय महत्व

श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय भारत के उन विशिष्ट विश्वविद्यालयों में है, जिसकी स्थापना विशेष रूप से वैदिक अध्ययन, वेदांग, आगम, संस्कृत तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के उद्देश्य से की गई है।

यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक शिक्षा एवं अनुसंधान का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है, जहाँ परम्परागत गुरुकुल प्रणाली और आधुनिक विश्वविद्यालयीय शिक्षा का समन्वय किया गया है।

विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह वेदों की मौखिक परम्परा, शुद्ध स्वर-पाठ, संस्कृत अध्ययन, पाण्डुलिपि संरक्षण तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के पुनर्जीवन के लिए समर्पित है। यहाँ किए जाने वाले शिक्षण एवं अनुसंधान कार्य भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ देश में भारतीय ज्ञान-प्रणाली (IKS) को सुदृढ़ बनाने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान-परम्परा, संस्कृत तथा पारम्परिक विद्याओं के अध्ययन पर विशेष बल दिया गया है। इस दृष्टि से श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह विश्वविद्यालय वैदिक ज्ञान को आधुनिक अनुसंधान, प्रकाशन तथा शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का कार्य कर रहा है।

इस प्रकार, श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय केवल एक शिक्षण संस्था नहीं, बल्कि भारत की वैदिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, भारतीय ज्ञान-परम्परा के पुनरुत्थान तथा राष्ट्र की बौद्धिक और सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान देने वाला एक राष्ट्रीय महत्त्व का विश्वविद्यालय है।

उपसंहार

श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय केवल एक उच्च शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि भारत की सनातन वैदिक विरासत का जीवंत केन्द्र है। यहाँ परम्परा और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। वेद, संस्कृत, आगम तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, संवर्धन और वैश्विक प्रसार में इस विश्वविद्यालय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भविष्य में भारतीय ज्ञान-परम्परा के पुनर्जागरण में इस विश्वविद्यालय की भूमिका और अधिक व्यापक होने की पूर्ण संभावना है।

समाप्त।

(नीतिकथा)

ज्ञान और बल में श्रेष्ठ कौन?

- श्री के.रामनाथन

प्राकृतिक सुंदरता से समृद्ध एक घने पर्वत शृंखला के बीच एक शांत आश्रम स्थित था। झरनों की कलकल ध्वनि और हरे-भरे विशाल वृक्षों का वातावरण वहाँ सदैव परम शांति प्रदान करता था। उस आश्रम में ब्रह्मानंद नाम के एक महान संत रहते थे। वे अपने आश्रम में रहने वाले शिष्यों को वेदों और आध्यात्मिक सिद्धांतों की शिक्षा बहुत ध्यानपूर्वक देते थे।

उनके पास शिक्षा प्राप्त करने वाले कई शिष्यों में सोमेश और राजेश नाम के दो युवा सबसे अलग थे। दोनों ही अतुलनीय शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि और महान सामर्थ्य से संपन्न थे। फिर भी, दोनों के भीतर एक छोटा सा अहंकार और प्रतिस्पर्धा की भावना छिपी हुई थी। अपनी फुर्ती और बुद्धि पर अत्यधिक विश्वास रखने वाले सोमेश ने मन ही मन अभिमानपूर्वक सोचा, ''निश्चित रूप से मैं सोमन से ज्ञान और बल में श्रेष्ठ हूँ।'' इसी प्रकार राजेश ने भी अपने भीतर विचार किया, ''कोमन भले ही फुर्तीला हो, लेकिन गहरे ज्ञान और सच्चे बल में मैं ही उससे श्रेष्ठ हूँ।''

यह अप्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा और मनमुटाव दिन-ब-दिन बढ़ता गया। एक दिन, अपने संदेह को दूर करने और यह साबित करने के लिए कि कौन श्रेष्ठ है, दोनों गुरूजी के पास पहुँचे।

सोमेश ने प्रणाम करते हुए विनम्रता से कहा, ''गुरुदेव! हम कई वर्षों से आपसे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आप ही यह घोषित कीजिए कि हम दोनों में से ज्ञान और बल में सबसे श्रेष्ठ कौन है?'' गुरु आत्मानंद ने दोनों को शांत दृष्टि से देखा और मुस्कुराते हुए कहा, ''बच्चों! तुम दोनों ही श्रेष्ठ हो। दोनों ही महान सामर्थ्य, बुद्धि और योग्यता से संपन्न हो।''

परंतु सोमेश को यह उत्तर स्वीकार्य नहीं था। उसने प्रार्थना की, ''गुरुदेव! आप सामान्य बात कह रहे हैं। तुलनात्मक रूप से हम दोनों में से सबसे श्रेष्ठ कौन है, यह आप स्पष्ट रूप से घोषित करें।''

शिष्यों के मन में गहराई से जमा हुए अहंकार को केवल शब्दों से दूर नहीं किया जा सकता, यह समझते हुए गुरु ने कहा, ''ठीक है, जब सही अवसर आएगा, तब मैं इसकी घोषणा करूँगा,'' और उन्हें भेज दिया।

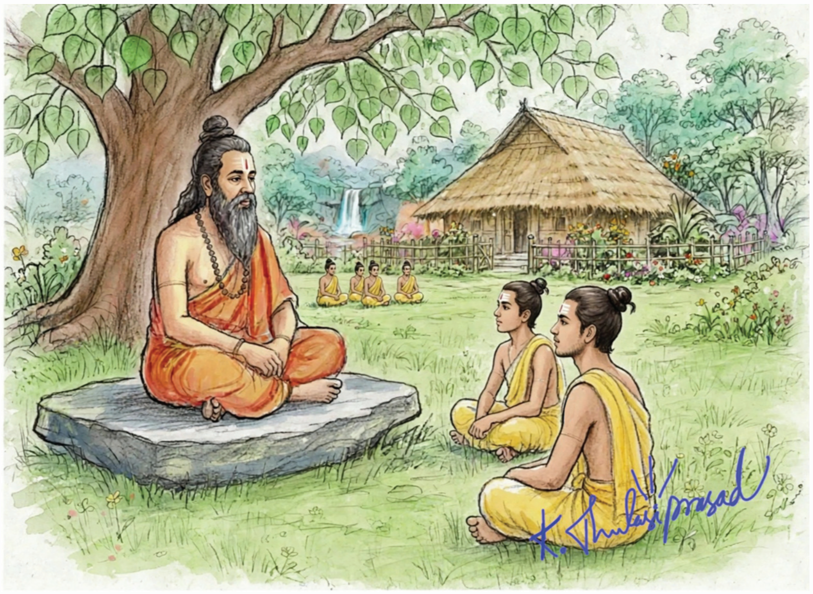

कुछ दिनों बाद, एक सुबह वेद-अभ्यास और चर्चा समाप्त होने पर, गुरु आत्मानंद ने सोमेश और राजेश को अपने पास बुलाया। थोड़े थके हुए से दिखते हुए गुरु ने कहा, ''प्रिय शिष्यों! आज सुबह के पाठ के बाद मुझे तीव्र भूख लग रही है। शरीर को भोजन की अत्यंत आवश्यकता है। पास के घने जंगल में स्वादिष्ट फलों से भरे वृक्ष हैं। तुम दोनों जाकर वहाँ से फल तोड़कर लाओ और मेरी भूख शांत करो।'' गुरु की आज्ञा सुनते ही दोनों तुरंत जंगल की ओर निकल पड़े।

रास्ते में सोमेश का मन गहराई से विचार करने लगा। ''यह सही अवसर है! गुरूजी ने जिस परीक्षा का उल्लेख किया था, वह यही है। जो पहले फल तोड़कर गुरूजी को देगा, गुरूजी उसी को श्रेष्ठ घोषित करेंगे।'' इस विचार से सोमेश ने अपनी चाल तेज कर दी।

जंगल में थोड़ी दूर खोजने के बाद दोनों को एक विशाल वृक्ष दिखाई दिया। उसकी शाखाएँ बिना तोड़े लटके हुए पके और स्वादिष्ट फलों के भार से झुकी हुई थीं। परंतु, उस वृक्ष के चारों ओर घनी और नुकीली झाड़ियाँ बाड़ की तरह फैली हुई थीं। काँटों को पार करके पेड़ पर चढ़ना बिना घायल हुए संभव नहीं था। यह देखते ही सोमेश ने एक पल भी नहीं सोचा। 'राजेश से पहले मुझे फल तोड़कर गुरूजी तक पहुँचाने हैं - इस स्वार्थी विचार ने उसके मन पर अधिकार कर लिया था।

काँटों की परवाह किए बिना, अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करके वह झाड़ियों के ऊपर से कूद पड़ा। नुकीले काँटों ने उसके शरीर और कपड़ों को चीरकर घायल कर दिया। फिर भी, उसकी परवाह न करते हुए वह पेड़ की शाखा पकड़कर ऊपर चढ़ गया और जल्दी-जल्दी कुछ फल तोड़ लिए। फिर उसी तरह काँटों पर से कूदकर नीचे आया और चोटों के दर्द की परवाह किए बिना, फल लेकर आश्रम की ओर अत्यंत तीव्र गति से भागा।

लेकिन राजेश बिल्कुल भी घबराया नहीं। उसने स्थिति का शांति से निरीक्षण किया। केवल शारीरिक बल का प्रयोग करना सही समाधान नहीं है, यह उसने समझ लिया। आस-पास खोजने पर उसे लकड़हारे की एक पुरानी और धारदार कुल्हाड़ी मिली। राजेश शांति से पेड़ के पास आया और एक-एक करके काँटों को काटने लगा। अपने परिश्रम से उसने पेड़ के चारों ओर की झाड़ियों को पूरी तरह साफ कर दिया और तने तक पहुँचने का एक स्पष्ट और सुरक्षित रास्ता बना दिया। इसके बाद, वह बड़ी आसानी से पेड़ पर चढ़ा, बिना किसी चोट के अच्छे फल तोड़े और आश्रम की ओर चल पड़ा।

राजेश के वहाँ से निकलने के थोड़ी देर बाद, उस मार्ग से कुछ राहगीर गुजरे। लंबी यात्रा के कारण वे बहुत थके हुए थे और भूख-प्यास से व्याकुल थे। तभी उनकी नजर उस फलदार वृक्ष पर पड़ी। पेड़ के पास पहुँचने के लिए नुकीले काँटों के बीच एक बना हुआ रास्ता देखकर उन्हें बड़ा। आश्चर्य और आनंद हुआ। ''अरे वाह! किसी पुण्यात्मा ने हमारे लिए रास्ता बनाया है!'' - यह कहते हुए वे कृतज्ञतापूर्वक उस रास्ते से आसानी से गए, फल तोड़कर खाए और अपनी भूख मिटाई। फिर पेड़ की छाया में बैठकर विश्राम किया और अपनी थकान दूर की।

दूर से यह सब देख रहे गुरु आत्मानंद मन ही मन मुस्कुरा दिए।

आश्रम में, राजेश से पहले फल लेकर पहुँचा सोमेश गर्व से गुरु के पास खड़ा था। राजेश ने भी आकर अपने फल गुरु के समक्ष रख दिए। सोमेश ने

उत्सुकता से पूछा, "गुरुदेव! आपके कहे अनुसार हम फल ले आए हैं। अब बताइए, हममें से बल और ज्ञान में श्रेष्ठ कौन है?"

गुरु आत्मानंद ने दोनों को प्रेम से देखा और निर्णय दिया, "तुम दोनों में से राजेश ही अधिक बुद्धिमान और बलवान है।"

यह सुनकर सोमेश का चेहरा उतर गया। उसने उदास होकर पूछा, "गुरु देव! यह कैसे संभव है? उन खतरनाक काँटों को पार करके, घायल होने पर भी परवाह न करते हुए, सबसे पहले आपके लिए फल मैं लाया! फिर सोमन मुझसे श्रेष्ठ कैसे हो सकता है?"

गुरु ने सोमेश को अपने पास बैठाया और स्नेहपूर्वक समझाया "प्रिय शिष्य! तुमने जो किया वह निस्संदेह एक अद्भुत पराक्रम था। परंतु तुम्हारे कार्य के पीछे तुम्हारा स्वार्थ था। किसी भी तरह पहला फल देकर गुरु से प्रशंसा प्राप्त करना और सोमन से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करना ही तुम्हारे मन में मुख्य था। तुमने केवल स्वयं को और अपनी जीत को देखा।"

फिर राजेश की ओर संकेत करते हुए गुरु ने कहा, "परंतु राजेश ने, भले ही थोड़ा विलंब किया, काँटों को काटकर रास्ता बनाया। उसके उस जन-कल्याणकारी कार्य के कारण भूख से व्याकुल राहगीर बिना किसी खतरे के पेड़ तक पहुँच सके, फल खाकर अपनी भूख मिटा सके और छाया में विश्राम कर सके। सोमन के कार्य में स्वार्थ नहीं था; उसमें केवल परोपकार और सेवा भाव था।"

गुरु ने शिष्यों की आँखों में सीधे देखते हुए वह अंतिम सत्य कहा, "सच्चा बल केवल शरीर की गति या शक्ति में नहीं है; सच्चा ज्ञान केवल अहंकार या तर्क में नहीं है। जिसके भीतर परोपकार की भावना, दया और दूसरों की सहायता करने का सेवा-भाव है - वही वास्तव में सबसे अधिक बलवान और ज्ञानी है!"

गुरु के इन शब्दों ने सोमेश के मन से अहंकार रूपी अंधकार को पूरी तरह मिटा दिया। केवल स्वार्थी प्रतिस्पर्धा के लिए कार्य करने की अपनी भूल पर उसे अत्यंत लज्जा आई।

आँखों में आँसू लिए, सोमेश राजेश की ओर बढ़ा और उसे गले लगाकर बधाई दी। "मुझे क्षमा कर दो सोमन! आज तुमने मुझे समझा दिया कि सच्ची श्रेष्ठता क्या होती है," उसने गद्गद स्वर में कहा। राजेश ने भी मुस्कुराते हुए उसे गले लगा लिया। उस दिन से दोनों एक-दूसरे को नीचा दिखाने वाले प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सेवा-भाव और सच्चे ज्ञान से युक्त सगे भाइयों की तरह रहने लगे।

नवंबर 2026 महीने का पर्व

08. नरक चतुर्दशी, दीपावली
09. श्री केदारगौरीव्रत
13. नागुलचविति
14. बाल दिवस
16. तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग
21. कैशिकद्वादशी,
श्रीचक्रतीर्थ मुक्कोटी
24. कार्तिक पूर्णिमा, कृत्तिका दीपोत्सव,
श्री कपिलतीर्थ मुक्कोटी

चित्रकथा

प्रथम पूजा
प्रथम नैवेद्य प्रथम दर्शन

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एन.रजनी
चित्रकार - श्री के.तुलसीप्रसाद

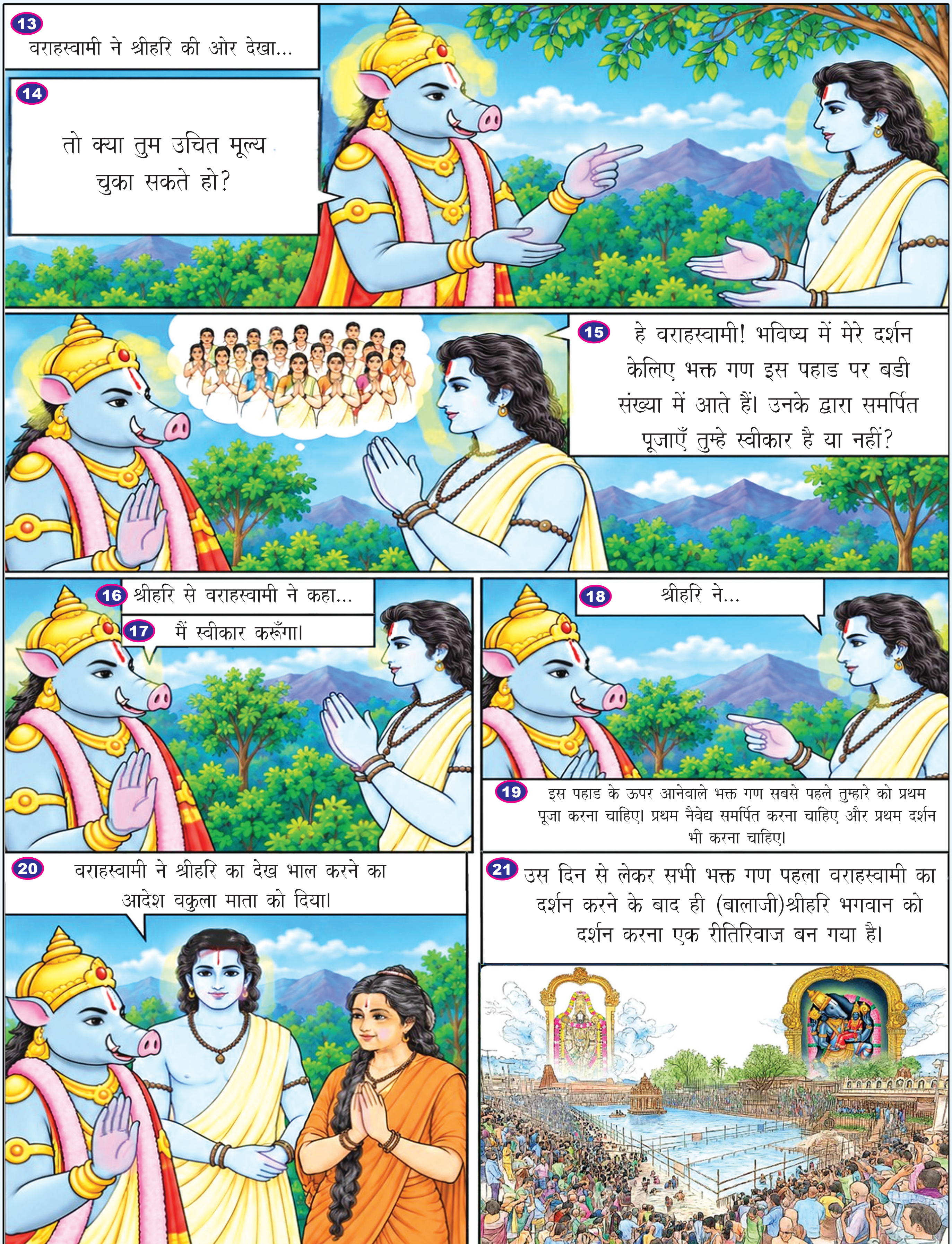
13 वराहस्वामी ने श्रीहरि की ओर देखा...
14 तो क्या तुम उचित मूल्य चुका सकते हो?
15 हे वराहस्वामी! भविष्य में मेरे दर्शन केलिए भक्त गण इस पहाड पर बडी संख्या में आते हैं। उनके द्वारा समर्पित पूजाएँ तुम्हे स्वीकार है या नहीं?
16 श्रीहरि से वराहस्वामी ने कहा...
17 मैं स्वीकार करूँगा।
18 श्रीहरि ने...
19 इस पहाड के ऊपर आनेवाले भक्त गण सबसे पहले तुम्हारे को प्रथम पूजा करना चाहिए। प्रथम नैवेद्य समर्पित करना चाहिए और प्रथम दर्शन भी करना चाहिए।
20 वराहस्वामी ने श्रीहरि का देख भाल करने का आदेश वकुला माता को दिया।
21 उस दिन से लेकर सभी भक्त गण पहला वराहस्वामी का दर्शन करने के बाद ही (बालाजी)श्रीहरि भगवान को दर्शन करना एक रीतिरिवाज बन गया है।

अक्तूबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

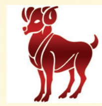

मेष राशि - सेहत कुछ ठीक कुछ खराब रह सकता है जिससे मन कभी-कभी अशान्त और भयग्रस्त रहेगा। धनलाभ होगा, पूर्व योजना सफल होंगे, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, गृहस्थ जीवन में कुछ परेशानियाँ हो सकती है, अपने वाणी पर नियन्त्रण रखे, पत्नी को प्रसन्न रखने का प्रयास करें। सन्तान सुख मध्यम रहेगा, भाग्यफल ठीक है, कार्यक्षेत्रों में विघ्न-बाधायें आ सकती हैं परन्तु कार्य सफल होंगे।

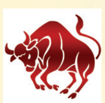

वृषभ राशि - स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, अर्थार्जन के मार्ग में उपस्थित बाधायें दूर होंगी। छात्रों के लिए अनुकूल समय, इष्टमित्रों से अनबन होती रहेगी, बन्धुजनों का असहयोग एवं विरोध रहेगा, व्यापारिक क्षेत्रों में परिवर्तन होंगे, कार्यक्षेत्रों का स्थानान्तरण एवं विस्तार होगा, भूमि, वाहन प्राप्ति, दाम्पत्य जीवन मध्यम रहेगा, अचानक रोगभय लगा रहेगा। सुन्दरकाण्ड का नित्य पाठ करें।

मिथुन राशि - उत्तम कार्य एवं स्वस्थ शरीर रहेगा, धनलाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे परन्तु लाभ से अधिक खर्च होगा। साहस धैर्य बना रहेगा, भाई-बन्धुओं की चिन्ता लगी रहेगी, इष्टमित्रों का पूर्ण सहयोग बना रहेगा, सन्तान के लिए भविष्य की चिन्ता लगा रहेगा। भाग्यफल प्रबल है, माता-पिता का स्वास्थ्य कुप्रभावित रहेगा, छात्रों के लिए सुअवसर, दाम्पत्यजीवन उल्लास पूर्ण रहेगा।

कर्कटक राशि - अपने दिनचर्या को नियमित रूप से करें वरना स्वास्थ्य खराब होंगे, शारीरिक कष्ट रक्त-पित्त-विकार, धनहानि-योग, क्रोध संवेग पर नियंत्रण रखें। राहु मतिभ्रम उपस्थित कर सकता है, योजना में रुकावट उलझनें होगी, गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा, कभी-कभी बन्धु-बान्धवों एवं मित्रों से मत भेद की स्थिति बनी रहेगी अतः अपने आपको नियन्त्रित एवं संयमित रखें।

सिंह राशि - शारीरिक कष्ट उदर एवं वात-विकार, नेत्र वेदना, धनलाभ मध्यम, अपने भोजन तथा वाणी का विशेष ध्यान रखें। पिता/माता का सुख मध्यम रहेगा, भाग्य में अड़चने आ सकती है, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में मन लगा रहेगा, कार्यक्षेत्रों में लाभ-हानि दोनों हो सकता है। पारिवारिक कलह, गृहस्थी में परेशानी, अपने से उच्च लोगों का मान-सम्मान करे जिससे आगे की मार्ग प्रशस्त होगा।

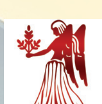

कन्या राशि - स्वास्थ्य ठीक रहेगा, अत्यधिक बोलने या वाणी पर नियन्त्रण न रखने के कारण कुछ अपमान हो सकता है अतः सोच-समझकर चलें। अपने से उच्च अधिकारी से मेल-मिलाप रखने से सेवा कार्यों में पदोन्नति हो सकती है, और धनलाभ भी होंगे, मातृसुख, संतति सुख प्राप्त होंगे। आकस्मिक चोट चपेट अथवा गुप्तरोग का आक्रमण झेलना पड़ सकता है।

तुला राशि - शरीर स्वास्थ्य जिससे मन प्रसन्न रहेगा, ओजसता में कमी रहेगी, बल छीन होगा। पारिवारिक अशान्ति, दाम्पत्य कलह, घरेलू झंझट, अपनों का असहयोग, बन्धु-बान्धवों से खटपट, उत्साहवृद्धि। मातृसुख में कमी, संतान क्लेश, योजना असफल, भाग्यफल मध्यम रहेगा, भूमि जायदाद विवाद के कारण मन खिन्न रहेगा। कार्यक्षेत्र में व्यवधान के उपरान्त सफलता प्राप्त होंगे।

वृश्चिक राशि - शारीरिक अस्वस्थता, मानसिक तनाव, दूराचार एवं असंगत से बचे, क्रोध संवेग पर नियन्त्रण रखें। पितृ/मातृ पीड़ा, संतति चिन्ता रहेगी परन्तु अनुकूलता बनी रहेगी, दैनिक कारोबार में विघ्न बाधायें उपस्थित होंगी। गृहस्थ जीवन मध्यम रहेगा, कार्यक्षेत्रों में संघर्ष के उपरान्त सफलता, मासान्त अधिक खर्च, आमदनी के मार्ग प्रशस्त होंगे। अपनों का सहयोग, इष्टमित्रों से मेलमिलाप रखने से कार्यक्षेत्रों में लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

धनुष राशि - उत्तम स्वास्थ्य, पुष्ट शरीर रहेगा, सट्टा व शेयर मार्केट में मन लगेगा परन्तु अपने सूझ बूझकर धन लगाएँ। दुष्ट लोगों के बचकर रहें, भूमि, भवन, वाहन सुख की प्राप्ति के योग हैं, विद्यार्थियों के लिए सुअवसर, जीवन साथी के स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखें। उत्तम विचार विवेक समाप्त होकर भ्रम की स्थिति बनेगी, पारिवारिक सुख प्राप्त होंगे, अचानक रोगभय।

मकर राशि - सेहत ठीक रहेगा। जिससे चित्त प्रसन्न रहेगा परन्तु अपने वाणी व आहार पर पूर्ण संयम रखें। अन्यथा स्वास्थ्य खराब होगी। आमदनी से अधिक धन खर्च होंगे, परिवार में उथल पुथल की स्थिति बनी रहेगी, गृहस्थ जीवन कष्टमय, अपने पुरुषार्थ एवं दैवबल से कठिन परिस्थितियों में भी प्रगतिपथ पर अग्रसर होते रहेंगे। सन्तान सुख मध्यम रहेगा, गुप्त रोग, भाग्य एवं कार्यक्षेत्रों में परिवर्तन व तरक्की के योग।

कुंभ राशि - सेहत कमजोर, शारीरिक छीनता, उदर और वात-विकार बना रहेगा, बन्धु-बान्धुवों की चिन्ता से मानसिक तनाव। पूर्व योजना सफल होंगे, देव-द्विज-गुरु के कृपा से सन्तति सुख प्राप्ति तथा जीवन साथी के अन्वेषण में किए गए प्रयास सफल होंगे। भ्रातृचिन्ता, पराक्रम की हानि, किसी से धन का लेन-देन न करे वरना कर्जा हो जायेगा।

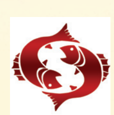

मीन राशि - आपको शरीर के ऊपर पूर्ण ध्यान रखना होगा वरना सेहत खराब होगी, विपरीत-लिंगियों से सावधान रहें, सेवाक्षेत्र में लगे कर्मयोगियों को प्रोन्नति में विघ्न उपस्थित होगा। धनलाभ के योग, खर्च कम होंगे, अपनों का सहयोग, इष्टमित्रों का साथ रहेगा, सन्तान की चिन्ता बनी रहेगी, भाग्यफल मध्यम, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में मन लगा रहेगा।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं..

क्विज-51

1) नंदक खड्ग अंश से आविर्भाव बालाजी का भक्त का नाम क्या है?
ज)..
2) श्री स्वामिपुष्करिणी के अत्यंत नजदीक में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)..
3) बालाजी भगवान के पहले ही किस मूर्ति को दर्शन करना है?
ज)..
4) वैदिक विश्वविद्यालय का पूरा नाम बताइए?
ज)..
5) विजयदशमी के दिन किस देवी को आराधना करना है?
ज)..
6) दशहरा के दिन किस वृक्षराज को पूजा करना है?
ज)..
7) पांडवों ने अज्ञात वास समय में अपने अस्त्र-शस्त्र को किस वृक्ष के ऊपर छुपाए है?
ज)..
8) चक्रस्नान कहा संपन्न करते हैं?
ज)..
9) स्विम्स (SVIMS) अस्पताल का पूरा नाम लिखिए?
ज)..
10) बर्ड (BIRRD) अस्पताल का पूरा नाम लिखिए?
ज)..
11) आश्वयुज दशमी के दिन संपन्न करनेवाले त्योहार का नाम क्या है?
ज)..
12) हंस वाहन किस वाहन सेवा के बाद संपन्न करते हैं?
ज)..
13) अन्नप्रसाद केंद्र का नाम किस भक्तिन के नाम पर रखा है?
ज)..
14) बालाजी भगवान के विशिष्ट प्रसाद का नाम क्या है?
ज)..
15) आयुध पूजा कब मनाते हैं?
ज)..

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

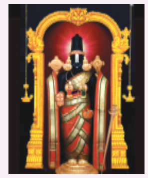

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC

दि. 16-09-2026 को तिरुमल में स्थित श्री वेंकटेश्वर अजायबघर को मुख्यमंत्री जी ने प्रारंभोत्सव किया। हीलिंग अण्ड डिवोषनल एक्सपीरियन्स सेंटर के अंतर्गत आयोजित की गयी 'दुर्लभ दर्शन' वर्चुवल रियालिटि विभाग को मुख्यमंत्री जी ने प्रारंभोत्सव किया और 'श्रीवारि धर्मरथ' नामक एलक्ट्रिक निःशुल्क बसों को आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने प्रारंभोत्सव किया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-09-2026 and Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd. No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.